दो दिवसीय

राष्ट्रीय संगोष्ठी

स्मारिका SOUVENIR

16-17 फरवरी, 2019

वर्तमान शिक्षा पद्धति एवं सृजनात्मकता

आयोजक

शिक्षा विभाग

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

छत्तीसगढ़ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद

उमेश पटेल
मंत्री
उच्च शिक्षा, कौशल विकास,
तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार,
विज्ञान और प्रौद्योगिकी, खेल एवं युवा कल्याण विभाग

मंत्रालय, कक्ष क्रमांक- M1-12
महानदी भवन, अटल नगर, रायपुर 492002 (छत्तीसगढ़)
फोन : 0771-2510316, 2221316
नि : D-1/2, शास. आवासीय परिसर, देवेन्द्र नगर, रायपुर
फोन : 0771-2881030
नंदेली कार्यालय : 7000477747

क्रमांक 152/B

दिनांक 08/04/2019

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि पंडित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़ बिलासपुर द्वारा "वर्तमान शिक्षा पद्धति एवं सृजनात्मकता" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है । इस अवसर पर आयोजकों द्वारा देश के प्रतिष्ठित विद्वान/विदुषी सहित प्राध्यापकों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों द्वारा शोध पत्र व आलेख की स्मारिका प्रकाशित की जा रही है।

मुझे आशा है कि यह राष्ट्रीय संगोष्ठी शिक्षा क्षेत्र के लिए सफल प्रयास होगी। संगोष्ठी के आयोजन और स्मारिका प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(उमेश पटेल)

Dr. Bansh Gopal Singh
Vice-Chancellor
Pt. Sundarlal Sharma (Open)
University Chhattisgarh, bilaspur

डॉ. बंश गोपाल सिंह
कुलपति
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय

क्रं. 38 /कु.स./19 बिलासपुर, दिनांक 13/02/2019

//संदेश//

यह प्रसन्नता का विषय है कि पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, बिलासपुर के द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी **"वर्तमान शिक्षा पद्वति एवं सृजनात्मकता"** विषय पर दिनांक 16 एवं 17 फरवरी, 2019 को आयोजित किया जा रहा है तथा इस अवसर पर शोध–पत्र/आलेख की स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

प्राचीन काल से वर्तमान तक शिक्षा पद्वति में कई नये प्रयोग हुए है। सूचना क्रांति के इस दौर में शिक्षा प्राप्ति के अनंत द्वार भी खुल गये है। स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा को ज्ञान का पर्याय न मानकर जीवन निर्माण, मनुष्यत्व के विकास एवं चरित्र के गठन का साधन माना है परन्तु वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में बच्चों मे सर्वाधिक महत्तवपूर्ण पक्ष सृजनात्मकता का विकास बाधित हो रहा है।

मैं आशा करता हूँ कि इस संगोष्ठी में वर्तमान शिक्षा पद्वति एवं सृजनात्मकता के समस्त पहलूओं पर विचार होगा एवं सार्थक निष्कर्ष आयेगा जिससे भविष्य में शिक्षा में बाधाओं को दूर करने में सहायता मिलेगी।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के सफल आयोजन एवं इस अवसर पर प्रकाशित होने वाले स्मारिका के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

13.2.'19
(बंश गोपाल सिंह)
कुलपति

कोनी-बिरकोना मार्ग, बिलासपुर (छ.ग.) 495009 दूरभाष (07752 240701, 240711) निवास (07752 424329)
Website : www.pssou.ac.in, Email : vc@pssou.ac.in

प्रो. अंजिला गुप्ता
कुलपति
Prof. Anjila Gupta
Vice-Chancellor

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय
बिलासपुर-495009, छत्तीसगढ़ (भारत)
Guru Ghasidas Vishwavidyalaya
(A Central University)
Bilaspur - 495009, Chhattisgarh (India)

शुभकामना सन्देश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि पण्डित सुन्दर लाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय, बिलासपुर में "वर्तमान शिक्षा पद्धति एवं सृजनात्मकता" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 16–17 फरवरी, 2019 को करने जा रहा है। भारत ने हमेशा से शिक्षा, विद्या, ज्ञान और विज्ञान को सर्वोच्च महत्व दिया है और यह तथ्य 700 ई.पू. स्थापित तक्षशिला विश्व के प्रथम शिक्षण संस्थान या विश्वविद्यालय के रूप में इतिहास में दर्ज है। वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में नए ज्ञान के सृजन और अनुप्रयोग की तीव्र गति, विशेष कर विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अविष्कृत नई सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (विशेष कर इंटरनेट) ने बदलते विश्व के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और शैक्षणिक ताने–बाने को विद्यार्थियों समझने मे महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में सृजनात्मकता और नवाचार में कमी के साथ साथ अनेक चुनौतिया रही है यथा – शिक्षा तक पहुंच और भागीदारी, शिक्षा की गुणवत्ता, शिक्षा में समता, व्यवस्थागत कार्यकुशलता, प्रशासन एवं प्रबंधन, अनुसंधान और विकास तथा शिक्षा विकास के लिए वित्तीय प्रतिबद्धता जैसी अनेक स्थाई चिंताएं और चुनौतियां मौजूद है। भारत सरकार द्वारा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने और शिक्षा की भागीदारी तथा पहुंच को बढ़ाने हेतु समय समय पर अनेक आयोग गठित किए गए थे। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948–49), माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53), शिक्षा आयोग (1964–66), राष्ट्रीय शिक्षा आयोग–। और ।। (1983–85) इनमें शामिल प्रमुख आयोग है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में "वर्तमान शिक्षा पद्धति एवं सृजनात्मकता" विषय पर देश भर से पधारे शोधार्थी, शिक्षाविद्, विद्वानों तथा विषय विशेषज्ञों द्वारा विचार विमर्श और गहन चिंतन होगा और नई शिक्षा नीति निर्माण में सहायक होगा। वर्तमान विषय की गंभीरता इस बात से लगाई जा सकती है कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2016 के प्रारूप में भी नीतिगत ढाँचा के अंतर्गत नवाचार, सृजनता और उद्यमीयता के संवर्धन करने के लिए उच्चतर शिक्षा संस्थाओं में अगले पांच वर्षों में और 100 Incubation centers स्थापित किया जाना प्रस्तावित है।

इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की सफलता और सफल आयोजन हेतु शुभकामनाएं प्रेषित करती हूं।

(प्रो. अंजिला गुप्ता)
कुलपति

Phone : (07752) 260283, 260481 (O), 260351, 260288 (R), Fax : (07752) 260148 (O)
e-mail : vc@ggu.ac.in / dranjilagupta@gmail.com

Prof. Ravi Prakash Dubey
Vice-Chancellor
DR. C. V. RAMAN UNIVERSITY
KOTA, BILASPUR (C.G.)

प्रो. रविप्रकाश दुबे
कुलपति
डॉ. सी.व्ही रामन् विश्वविद्यालय
कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

पत्र क्र. 274 / कु.प. / सीवीआरयू / 2019

बिलासपुर दिनॉक: 07 / 02 / 2019

शुभकामना – संदेश

मुझे यह सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि पंडित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.) के तत्वाधान में दिनॉक 16–17 फरवरी 2019 को "वर्तमान शिक्षा पद्धति एवं सृजनात्मकता" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हो रही है।

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में "वर्तमान शिक्षा पद्धति एवं सृजनात्मकता" से जुड़े देश के प्रतिष्ठित विद्वान / विदुषि सहित, प्राध्यापकगण, शोधार्थी, विद्यार्थी भाग लेकर अपने शोध पत्रों के माध्यम से विचार व्यक्त करेंगे, इन विचारों और उनके उत्कृष्ठ शोधों से समाज में वर्तमान शिक्षा पद्धति एवं सृजनात्मकता की उन्नति और स्वीकृति की दिशा में एक नई ऊर्जा का विकास होगा। ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

मैं इस उपलब्धि के लिए पंडित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय के कुलपति, कुलसचिव व इस संगोष्ठी हेतु आयोजित समिति के सभी सदस्यों को हृदय की गहराइयों से शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ एवं संगोष्ठी की सफलता की कामना करता हूँ।

प्रो. रविप्रकाश दुबे
कुलपति

Bhopal Office : SCOPE Campus, NH-12, Near Misrod, Hoshangabad Road, BHOPAL - 47
Ph.: +91-755-2499657, 3293214-15-16-72, 3207080 Fax : +91-755-2429096

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़
कोनी, बिरकोना मार्ग, बिलासपुर (छ.ग.) 495009
दूरभाष (07752) 240702, 240712

शुभकामना संदेश

प्रत्येक मनुष्य में सृजन की अपार संभावनाएँ निहित होती है, इन संभावनाओं को विकसित करने का माध्यम है शिक्षा। शिक्षा मानव जीवन का अनमोल धन है, आजीवन नवीन विचारों, व्यक्तियों, संस्थाओं के सम्पर्क में आकर मिलने वाले अनुभवों से स्वयं का और समाज का जीवन बेहतर करना शिक्षा ही है।

अखिल विश्व की सभ्यता, संस्कृति, इतिहास, विज्ञान से परिचित कराना, श्रेष्ठ को अपनाने निम्न त्याग कर बालक में विद्यामान क्षमता गुणों के विकास द्वारा नवीन सृजन में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

नवीन सृजन हेतु समर्पण का होना आवश्यक गुण है। प्रत्येक काल, परिस्थिति में नव सृजन का क्रम बना रहता है, राष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजक एवं सहयोगी, सहभागी शिक्षक, शोधार्थी विद्वतजनों के अनुभव से नव सृजन की गति को तीव्र करेंगे, ऐसा विश्वास है।

संगोष्ठी की सफलता हेतु शुभकामनाएँ।

(डॉ. राजकुमार सचदेव)
कुलसचिव

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़
कोनी, बिरकोना मार्ग, बिलासपुर (छ.ग.) 495009
दूरभाष (07752) 240715

संयोजक की कलम से

विश्वविद्यालय विचारों को प्रकट करने का एक मंच प्रस्तुत करता है पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय में लगातार विचारों का मंथन का कार्य राष्ट्रीय संगोष्ठी के माध्यम से किया जाता रहा हैं। इसी कड़ी में एक संगोष्ठी वर्तमान शिक्षण पद्वति एवं सृजनात्मकता विषय पर भी आयोजित की जा रही है। क्या वर्तमान शिक्षण पद्वति बालकों को सर्वांगीण विकास करने में सक्षम है? क्या यह केवल सैद्धांतिक है या व्यवहारिक भी ? यह बालकों के मूलभूत गुण सृजनात्मकता को महत्व देता है या नहीं ? आदि प्रश्नों के उत्तर इस संगोष्ठी में खोजे जायेंगे। सृजनात्मकता एक प्राकृतिक गुण है यदि अवसर ठीक प्रकार से मिले तो निश्चित रूप से ही यह गुण उभर कर सामने आता है नहीं तो दब कर रह जाता है। घर हो या विद्यालय दोनों जगह यदि इसे पोषण मिले तो निश्चय ही यह प्रस्फुटित और पल्लवित होता है।

समाज का नवनिर्माण सृजन पर ही आधारित रहता है। इसका स्वरूप छोटा या बड़ा हो सकता है। अभी तक के जितने अविष्कार हुए है, वे सृजनात्मकता के ही उदाहरण है। विद्यालय में यदि शिक्षण पद्धति में हम इसे सम्मिलित करते हैं और बालकों को सकारात्मक वातावरण उपलब्ध कराते हैं, उन्हें अभिप्रेरित करते हैं तो निश्चय ही समाज विकास की ओर उन्मुख होगा।

विभिन्न राज्यों से आये विद्वान अपने अनुभवों एवं विचारों को व्यक्त करेगें, जो निश्चित ही शिक्षकों, प्रशिक्षार्थियों और विद्यार्थियों के लिए अमूल्य होगा। दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में सभी का स्वागत एवं अभिनंदन।

सधन्यवाद

संयोजक

डॉ.बीना सिंह | डॉ.अनिता सिंह | डॉ. प्रकृति जेम्स

आयोजन समिति

- मुख्य संरक्षक -

डॉ. बंश गोपाल सिंह

कुलपति, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर (छ.ग.)

डॉ. राजकुमार सचदेव

कुलसचिव, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर (छ.ग.)

- संयोजक -

डॉ. बीना सिंह

सहा. प्राध्यापक, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

डॉ. अनिता सिंह

सहा. प्राध्यापक, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

डॉ. प्रकृति जेम्स

सहा. प्राध्यापक, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

- समिति के सदस्यों की सूची -

क्र.	समिति	सदस्यों के नाम	दायित्व
1.	स्मारिका समिति एवं मुद्रण प्रकाशन समिति	डॉ. पुष्कर दुबे	संयोजक
		डॉ. एस.रुपेन्द्र राव	सदस्य
		डॉ. श्रीमती तनुजा बिरथरे	सदस्य
		डॉ. अनुपमा कुमारी	सदस्य
		डॉ. .ऋतुराज त्रिवेदी	सदस्य
		डॉ. अनुपा थॉमस	सदस्य
		डॉ. अमित पाण्डेय	सदस्य
		डॉ. दीपक पाण्डेय	सदस्य
		श्री हरीश चन्द्र वैष्णव	सदस्य
		श्री मजहर अली	सदस्य

2.	शैक्षणिक सत्र निर्धारण समिति	डॉ. प्रकृति जेम्स	संयोजक
3.	वित्त समिति	श्री चन्द्रशेखर जांगड़े	संयोजक
		श्री राकेश मानिकपुरी	सदस्य
		श्री आर.डी. वैष्णव	सदस्य
		श्री गौतम सिंह	सदस्य
		श्री सरोज मरावी	सदस्य
4.	आमंत्रण एवं विवरणिका (Brochure) वितरण समिति	डॉ. रुचि त्रिपाठी	संयोजक
		श्री गौतम सिंह	सदस्य
		श्री सौरभ वर्तक	सदस्य
		श्री शिरीष मिश्रा	सदस्य
		डॉ. दीपक पाण्डेय	सदस्य
		श्री हरदीप साहू	सदस्य
		श्री अखिलेश सनाढय	सदस्य
5.	मंच व्यवस्था एवं संचालन समिति	डॉ. अनिता सिंह	संयोजक
		डॉ. प्रकृति जेम्स	सदस्य
		डॉ. रुपेंन्द्र राव	सदस्य
		डॉ. रुचि त्रिपाठी	सदस्य
		डॉ. अनुपमा कुमारी	सदस्य
		श्रीमती एकता श्रीवास्तव	सदस्य
		श्री महेन्द्र कश्यप	सदस्य
		श्री रोहित भानू	सदस्य
6.	पंजीयन , किट एवं माण-पत्र वितरण समिति	श्री रेशम लाल	संयोजक
		डॉ. पुष्कर दुबे	सदस्य
		डॉ. प्रीति रानी मिश्रा	सदस्य
		डॉ. नीलिमा तिवारी	सदस्य
		श्री सालीक राम	सदस्य
		श्री विष्णु कांत	सदस्य
		डॉ. अनुपा थॉमस	सदस्य
		श्री धर्मेन्द्र पाण्डेय	सदस्य
		श्री पवनदेव वैष्णव	सहायक
		श्रीमती अंजू साहू	सहायक
7.	चाय, जलपान एवं भोजन समिति	डॉ. मोरध्वज त्रिपाठी	संयोजक
		डॉ. पुष्कर दुबे	सदस्य
		डॉ. एस.रुपेन्द्र राव	सदस्य
		डॉ. दीपक पाण्डेय	सदस्य

		डॉ. श्रीमती तनुजा बिरथरे	सदस्य
		डॉ. ऋतुराज त्रिवेदी	सदस्य
		श्री बालकराम चौकसे	सदस्य
		श्री फूलेश्वर वर्मा	सदस्य
		डॉ. सुषमा सोलंकी	सदस्य
		श्री नवीन साहू	सदस्य
		श्री काश तिवारी	सदस्य
		श्री पाडुरंगा बाबु	सदस्य
		श्री हरदीप साहू	सहायक
		श्री सुभाशिष डे	सहायक
		शिव नरायण यादव	सहायक
		सोहन बरेठ	सहायक
8.	गेस्ट हाउस आवास व्यवस्था समिति	श्री संजीव कुमार लवानियाँ	संयोजक
		डॉ. मनोज कुमार तिवारी	सदस्य
		श्री सौरभ वर्तक	सदस्य
		श्री. शैलेष पॉल	सदस्य
		श्री. नवीन साहू	सदस्य
		मो . इमरान	सहायक
9.	आतिथ्य एवं परिवहन समिति	डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति	संयोजक
		श्री संजीव कुमार लवानिया	सदस्य
		डॉ. अभय पाण्डेय	सदस्य
		श्री फूलेश्वर वर्मा	सदस्य
		श्री दीपक कुमार पाण्डेय (कु. कार्या.)	सदस्य
		श्री प्रवीण शर्मा	सदस्य
		श्री विश्वास जलताड़े	सदस्य
		श्री धर्मेन्द्र पाण्डेय	सदस्य
		श्री बिरिज खाण्डे	सदस्य
		मो वसीम अकरम	सदस्य
10.	तकनीकी समिति	श्री कपिल देव पटेल	संयोजक
		श्री घनश्याम साहू	सदस्य
		श्री महेन्द्र कश्यप	सदस्य
11.	प्रेस एवं मीडिया समिति	श्री दीपक कुमार पाण्डेय(कु. कार्या.)	संयोजक
		डॉ. अनुपमा कुमारी	सदस्य
		श्री सोमेन त्रिवेदी	सदस्य

मूल्यांकन एवं सृजनात्मकता का आपसी सम्बन्ध

डॉ. बीना सिंह
विभागाध्यक्ष शिक्षा विभाग

नमिता गौरहा
शोधार्थी (शिक्षा विभाग)

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर दृष्टिपात करें तो परिलक्षित होता है कि यह सैद्धांतिक अधिक है और व्यावहारिक कम। ऐसे में विषय और याद करने में विद्यार्थियों को अधिक मानसिक दबाव का सामना करना पड़ता है, जिसकी परिणति उसकी सृजनात्मकता शिथिल होने की संभावना बढ़ जाती है। जब भी हम शिक्षा के उद्देश्य की बात करते हैं तो इसका दायरा सर्वभौमिकता को प्रदर्शित करता है। जिसमें बच्चों का सर्वांगीण विकास निहित होता है, सर्वांगीण विकास से पर्याय बच्चों का मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, नैतिक एवं संवेगात्मक विकास से है। इन उद्देश्यों के आधार पर हम उनका आकलन करें तो इन उद्देश्यों की परिपूर्ति हेतु कार्य करने की आवश्यकता महसूस होती है। बच्चों के मानसिक विकास में अभिवृद्धि हेतु कक्षा में बच्चों से सीखने सिखाने की प्रक्रिया में जो क्रियाकलाप कराए जाते हैं उनका संबंध किताबों के इर्द–गिर्द ही होता है जो पूरी तरह रटने पर आधारित होता है। अर्थात हमारे शिक्षा का उद्देश्य परीक्षा पास करने के उद्देश्य में तब्दील हो जाता है और इस पूरी प्रणाली में न सिर्फ बच्चे, शिक्षक और पालक बल्कि पूरा समुदाय शामिल होता है। परीक्षा में जो बच्चा अच्छा अंक प्राप्त करता है वह उतना ही होशियार माना जाता है। यदि कम अंक प्राप्त करता है तो वह बच्चा अन्य क्षेत्रों जैसे व्यवहार कुशल, अच्छा कलाकार या अच्छा खिलाड़ी, संगीत में श्रेष्ठ होने के बावजूद भी कमजोर माना जाता है, अगर बालक का व्यवहारिक ज्ञान अथवा उपलब्धियों को नजर–अंदाज किया जाए तो सृजनशीलता समाप्ति की ओर अग्रसर होने लगती है, और वह अपने संपूर्ण जीवन में एक तकनीकी मानव बन जाता है। एक इंसान के मन में संवेदना का अभाव हो जाता है। वर्तमान परीक्षा पद्धति में मूल्यांकन का मूल आधार लगभग समाप्त होता जा रहा है, सृजनात्मक दृष्टि से परीक्षा पद्धति को व्यवहारिक एवं प्रायोगिक होना चाहिए जिससे बालक का मूल्यांकन उनके समस्त आयामों के आधार पर किया जा सके ।

सृजनात्मक दृष्टि को ध्यान में रखते हुए सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया बहुत ही सराहनीय कदम है जिसमें वर्तमान परीक्षा पद्धति को ध्यान में रखते हुए बच्चों के सर्वांगीण विकास पर बल दिया गया जो बालक की पूर्ण सश्जनात्मक को प्रदर्शित करता है सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के क्षेत्र को दो आधारों पर बांटा गया है संज्ञानात्मक क्षेत्र एवं सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र। संज्ञानात्मक क्षेत्र का आकलन दो आधार (फारमेटिव एवं समेटिव) पर आधारित होता है जो बालक की सृजनशीलता को पूर्णतः उभार कर सामने लाने में सहयोग प्रदान करता है

'मॉडल स्कूल' - ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवतापूर्ण शिक्षा की ओर एक कदम

डॉ. अनिता सिंह
(सहायक प्राध्यापक)

भरत प्रसाद गुप्ता
(शोधार्थी)

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

राष्ट्र का विकास उसके शिक्षित नागरिकों पर निर्भर करता है। यदि शहरी या ग्रामीण किसी भी व्यक्ति के लिए शिक्षा से अछूता हो जाना राष्ट्र को विकसित राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर नही हो पाएगा। 15 अगस्त 2007 को प्रधानमंत्री द्वारा अपने वक्तव्य अनुसार प्रत्येक ब्लॉक में विशेषकर शैक्षिक रूप से पिछड़े ब्लॉक में एक उच्च गुणवत्तापूर्ण विद्यालय की स्थापना की जाएगी कहा गया था। जिसके अन्तगर्त 6000 स्कूलों की स्थापना का उद्देश्य है। जो उस क्षेत्र के अन्य विद्यालयों का मॉडल होगा। इस विद्यालय को मॉडल स्कूल के नाम से संचालित किया जा रहा है। यह विद्यालय ग्रामीण क्षेत्रों की प्रतिभाओं को उभारने एवं विकास को दृष्टिगत रखते हुए स्थापित किये जा रहे हैं।

यह आलेख मॉडल स्कूल योजना के विभिन्न आयाम जैसे– पृष्ठभूमि, संकल्पना, विशेषताओं, उद्देश्य, मानक, प्रवेश इत्यादि पर आधारित है।

वर्तमान शिक्षा पद्धति में सुधार की आवश्यकता

डॉ अनिता सिंह
सहायक प्राध्यापक
पं सुंदरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय
छत्तीसगढ़, बिलासपुर

नीता कश्यप
सहायक प्राध्यापक
पं. मदन मोहन मालवीय शिक्षा महाविद्यालय
लावर, बिलासपुर (छ.ग.)

हमारी मनोवृत्ति का निर्माण हमारे जीवन, हमारे आचरण के अनुरूप ही होता है। हमारे जीवन तथा आचरण का मूल आधार है हमारी शिक्षा। कहा गया है "जैसा खावे अन्न वैसा बने मन। "यहां पर अन्न का अर्थ भोजन है, जो शारीरिक और मानसिक दोनों ही प्रकार का होता है। इसलिए यह सिद्ध होता है कि आजकल मानव समाज में जो तरह–तरह के छोटे–बड़े दोष दिखलाई पड़ रहे हैं उनका मूल हमारी शिक्षा ही है।

आजकल हर जगह शिक्षा प्रसार की नई–नई योजनाएं बन रहीं है। हमारी राष्ट्रीय सरकार इस बात की घोषणा कर चुकी है कि वह शीघ्र ही देश से निरक्षरता को मिटा देगी। परंतु विचार यह करना है कि हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली कैसी है और वह किस प्रकार के जीवन का निर्माण कर रही है तथा हमारी शिक्षा वास्तव में कैसी होनी चाहिए।

आजकल हमारी शिक्षा की व्यवस्था वास्तव में बहुत दोषयुक्त हो गई है। इसको मिटाकर हमें ऐसी शिक्षा–दीक्षा का विधान करना होगा जो हमें स्वयं अपने ऊपर विजय प्राप्त कर सकने में समर्थ बना सके तथा ज्ञान का अंतिम लक्ष्य चरित्र निर्माण ही होना चाहिए।

इसलिए हमारी शिक्षा को तीन भागों में विभाजित किया जाना चाहिए–"शारीरिक शिक्षा, मानसिक शिक्षा और आध्यात्मिक शिक्षा।" हम स्वस्थ हों, हमारे स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क हो और हमारा स्वस्थ मन जीवन के स्वास्थ्य पर विचार कर सकने में समर्थ हो।

संक्षेप में हमारा आशय यही है कि शिक्षा के द्वारा हमारा समाज सचमुच स्वस्थ बने। हमारी शिक्षा केवल काम चलाऊ वस्तु न हो, वह केवल परीक्षा पास करने का माध्यम न हो, वरन् हमें भली प्रकार जीना सिखाये। विद्या वही है जो हमें इस दुनिया की चिंता से मुक्त करके हमारी नैया को भवसागर से पार लगाने में समर्थ हो – "सा विद्या या विमुक्तये।"

शिक्षालयों में विधिक शिक्षा का अनुप्रयोग

डॉ तनुजा बिरथरे
सहा. प्राध्यापक (विधि)
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

मानव एक सामाजिक प्राणी है और उसे समाज में अनुशासित रखा जाना आवश्यक है । सभ्य समाज में मानव को अनुशासित रखने हेतु शिक्षा की बड़ी भूमिका हैऔर यह शिक्षा उसे शिक्षालयों से प्राप्त होती है।

वर्तमान स्थिति में शिक्षालयों द्वारा दी जाने वाली शिक्षा समावेशी है। ऐसी स्थिति में विधि विषयो का समावेश कर अनुप्रयोग किया जाना आवश्यक है । मनुष्य विधि द्वारा ही नियंत्रित होता है क्योंकि उसमें कठोर दण्ड एवं जुर्माने का प्रावधान है। कोई भी व्यक्ति इस आधार पर नही बच सकता की उसे विधि का ज्ञान या जानकारी नही थी। इसीलिये सामान्य जीवन में उपयोग मे आने वाले कानूनों की जानकारी हासिल करना या कराना आवश्यक है। जैसे वर्तमान शिक्षा पद्धति में विधि विषयों का समावेश नही होने से व्यक्तियों को उसकी जानकारी नही रहती है और वह अनजाने में अपराध कर बैठता है या अपना शोषण करवाता रहता है। जानकारी के अभाव में वह कानून के हाथों मजबूर हो जाता है। शिक्षालयों द्वारा सामान्य विधि के विषयों की जानकारी प्रदान किया जाना आवश्यक है क्योंकि विवाह की आयु सीमा तय है । इसी तरह कई मामले यौन उत्पीड़न के भी दिखाई देते है। घरों में बालिकाओ के साथ घरेलू हिंसा होते हुए दिखाई देती है किंतु जानकारी के अभाव में वह अपनी पीड़ा व्यक्त नही कर पाती , संस्थानों में शिक्षा के अधिकार का लाभ प्रदान नही कराया जाता,ऐसी परिस्थितियों से निबटने हेतु सामान्य कानूनों की जानकारी प्रदान किया जाना आवश्यक है जैसे–

विवाह से संबंधित कानून, यौन शोषण से संबंधित कानून, यातायात से संबंधित कानून, उपभोक्ताओं के संरक्षण के लिये बनाया गया कानून, घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण करने संबंधित कानून, लैंगिक उत्पीड़न विधि (POCSO ACT) , बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम, बाल श्रम प्रतिषेध अधिनियम, आदि दैनिक दिनचर्या में उपयोग होने वाले कानूनों की जानकारी प्रदान/प्राप्त कराना शासन का भी दायित्व है और व्यक्तियों का भी कर्तव्य है।

दूरस्थ शिक्षा में नई मीडिया प्रौद्योगिकीयाँ : उपयोग एवं प्रभाव का विश्लेषण

डॉ. अनुपमा कुमारी
सहायक प्राध्यापक, पत्रकारिता विभाग
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

नई प्रौद्योगिकी के उद्‌भव ने शिक्षण और सीखने के क्षेत्र में एक बड़ी क्रांति लायी है। दूरस्थ शिक्षा संस्थान विभिन्न मीडिया का उपयोग सीखने, जानकारी देने और शिक्षकों व शिक्षार्थियों के साथ जुड़ने के लिए करता है। यहाँ मीडिया को दो श्रेणियों में बाँटा गया है, पहला जिसका उपयोग विषय सामग्री वितरित करने के लिए किया जाता है, जैसे कि प्रिंट–सामग्री, वीडियो–टेप, ऑडियो–टेप, टेलीविज़न, कंप्यूटर–आधारित कोर्सवेयर, सीडी–रोम और दूसरा वह मीडिया है जो शिक्षकों और छात्रों के बीच संचार की अनुमति देता है जैसे फैक्स, रेडियो, टेलीकांफ्रेंसिंग, वीडियोकांफ्रेंसिंग, और इंटरनेट (पोनमेनी, 2013)। आज विकसित और विकासशील दोनों तरह के देशों में दूरस्थ शिक्षा, शिक्षा का सबसे तेजी से बढ़ता हुआ क्षेत्र है।

हमारे समय के नवीनतम तकनीकी नवाचार जिन्होंने शिक्षा पर बहुत प्रभाव डाला है, वे हैं, इंस्ट्रक्शनल रेडियो, टेलीविज़न, पर्सनल कंप्यूटर, इंटरनेट, वेब 2.0, ई–लर्निंग, एम–लर्निंग आदि। भारत जैसे विकासशील देश में, जहाँ आज भी गरीबी और अशिक्षा है और लोग औपचारिक प्रणाली में अपनी शिक्षा पूरी करने में विफल हैं, उनके लिए यह वरदान है।

प्रस्तावित अध्ययन निम्नलिखित शोध प्रश्नों को आधार बनाकर किया गया है–

1) क्या भारत में अग्रणी ओपन और डिस्टेंस लर्निंग इंस्टीट्यूट ने पारंपरिक प्रिंट से लेकर नई मीडिया तकनीकों से बदलाव लाया है?

2) क्या शिक्षार्थी और शिक्षक नई मीडिया तकनीकों का उपयोग कर संतुष्ट हैं?

3) अध्ययन सामग्री की वितरण प्रणाली को कौन से कारक प्रभावित करते हैं?

4) नए मीडिया का कौन सा माध्यम उन्हें ज्यादा पसंद है?

5) शिक्षार्थियों को नए मीडिया का उपयोग करने के लिए क्या प्रेरित करता है? इसके लिए वर्णनात्मक अनुसंधान शोध पद्धति का इस्तेमाल किया गया है. इसमें छात्रों, संस्थानों / विश्वविद्यालयों, विशेषज्ञों की राय भी शामिल है। शोध अध्ययन ओपन यूनिवर्सिटी व उसके विद्यार्थियों के लिए एक दिशा प्रदान करने में सहायक साबित होगा।

प्रमुख शब्द : न्यू मीडिया, दूरस्थ शिक्षा, नवाचार, अनुसंधान आदि।

शिक्षा पद्धति, परिणाम एवं तनाव प्रबंध के सन्दर्भ में सृजनात्मकता

डॉ. एस.रूपेन्द्र राव
विभागाध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग
पंडित सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

वर्तमान समय की इस व्यस्ततम दिनचर्या में कार्यो को सुचारू रूप से करना बेहतर परिणाम की अपेक्षा के साथ कार्य करना एक महत्वपूर्ण पक्ष है। जीवन में अच्छी सोच का विकास हमारी शिक्षा का अनिवार्य अंग है। व्यक्ति का व्यक्तित्व घर, परिवार आसपास के वातावरण एवं बेहतर सामाजिक– सांस्कृतिक वातावरण से बनता है। शिक्षा मनुष्य का मौलिक अधिकार है जिसे प्राप्त कर वह स्वयं, समाज एवं देश के लिए उपयोगी बनता है। वर्तमान शिक्षा पद्धति मे जहाँ एक ओर सूचनाओं का अम्बार है वहीं मूल्य आधारित शिक्षा का कहीं अभाव सा भी दिखता है। प्रतिस्पर्धा अधिकतम पाने की इच्छा तनाव, परिणाम की उच्च आकांक्षा इसका अनिवार्य सा अंग बन गया है ऐसी स्थिति में मौलिकता, सकारात्मकता का विकास एक बड़ी चुनौती सी लगती है। शिक्षा पद्धति के अन्दर पाठ्यक्रमों में हो रहे परिवर्तन एवं शैक्षिक वातावरण जहाँ एक और हमारा ज्ञान वर्धन तो कर रहे हैं परन्तु दूसरी ओर तनाव मैं वृद्धि एवं सृजनात्मकता में कमी भी ला रहे है। आज के समय की शिक्षा पद्धति मे बहुत से विकल्प मौजूद है किन्तु तनाव के बेहतर प्रबंधन के साथ मौलिकता को बनाए रखना और समायोजित व्यक्तित्व का विकास कुछ व्यक्ति ही कर पाते है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य वर्तमान शिक्षा पद्धति, परिणाम एवं तनाव के सन्दर्भ में विभिन्न महत्वपूर्ण पक्षों पर विचार करना एवं बेहतर विकल्पों को सामने लाना है

संकेत शब्द – शिक्षा पद्धति, तनाव प्रबंधन, सृजनात्मकता, वातावरण आदि

डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थाओं में गुणवत्ता मूल्यांकन: अध्यापक में कौशल विकास की भूमिका के परिप्रेक्ष्य में

डॉ. प्रकृति जेम्स
निर्देशिका
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग

सत्यप्रकाश यादव
शोधार्थी
शिक्षा

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

कौशल से तात्पर्य है कुशलता तथा कौशल के विकास से तात्पर्य है अध्यापक विद्यालय में ऐसा स्वस्थ उत्साही वातावरण निर्मित करता है जहां विद्यार्थी अपनी क्षमता के आधार पर अनुभवों से स्वयं ज्ञान प्राप्त कर सकता है डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थाएं जो प्रारंभिक कक्षाओं को पढ़ाने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करते हैं, इन कक्षाओं में बच्चों को संपूर्ण संसाधनों की उपलब्धता, भवन की उपलब्धता, शिक्षकों की नियुक्ति छात्रों की उपस्थिति इत्यादि प्रकियाएं गुणवत्ता का सूचक है अध्यापकों के कौशल विकास के संदर्भ में यह स्पष्ट

है कि कौशल वह अनुदेशनात्मक प्रकिया है जिसे शिक्षक कक्षा में शिक्षण की कियाओं में उपयोग करता है वर्तमान में सरकार द्वारा शालाओं में शैक्षिक स्तर में बदलाव व गुणवत्ता में सुधार हेतु बालकेन्द्रित शिक्षा पद्धति एवं समावेशी शिक्षा जैसे गुणात्मक परिवर्तन को शामिल किया गया है। इस तरह के परिवर्तन को हमारे शिक्षक अपनी कक्षाओं में शामिल कर कक्षा को सार्थक स्वरूप प्रदान कर सकते हैं।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सीखने से जुड़ी प्रकिया के सिद्धांतो पर निर्भर करती है, शिक्षक अपने कौशलों से युक्त शिक्षण पद्धति द्वारा कक्षा में ऐसा सुखद व अभिप्रेरणा युक्त वातावरण का निर्माण कर विद्यार्थियों को गतिविधि आधारित शिक्षण से शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

विद्यालय एवं घर में सृजनात्मक की स्वीकार्यता

डॉ. ईश्वर सिंह बरगाह
प्राचार्य

श्रीमती कीर्ति सिंह बरगाह
सहा. प्राध्यापक

छ.ग.कल्याण शिक्षा महाविद्यालय, अहेरी, दुर्ग (छ.ग.)

सृजन ही जीवन है और सृजन ही जीवन है। सृजन की यह प्रक्रिया जीवनभर निरंतर चलती रहती है। हम मनुष्य के रूप में सृजित हुए और मनुष्य मात्र के लिए सृजनशीलता की प्रासंगिकता विशेष रूप से बढ़ गयी है। हम इक्कीसवीं सदी के प्रगतिशील युग में रह रहे हैं। ऐसे समय में सृजनशीलता की आवश्यकता घर एवं विद्यालयों में बढ़ जाती है।

हमारे देश में सरकार द्वारा समय–समय पर गठित समितियों आयोगों आदि विशेष रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ने भी प्रत्येक स्तर के बालकों में सृजनशीलता विकास हेतु शिक्षा के गुणवत्ता पर बल दिया। आज के विद्यालय का स्वरूप पहले से अधिक भिन्न है। विद्यालय उतना ही अच्छा होगा, जितने कि उसके अध्यापक। एक विद्यालय, मानवता, सहिष्णुता, तर्क, प्रगति, प्रत्ययों के अपूर्व तथा सत्य की खोज के लिए स्थापित किया जाता है।

वर्तमान समाज तथा विविध रूप से उत्सुक होते विश्व ने सृजनशीलता के महत्व एवं स्वरूप में परिवर्तन कर दिया है आज विज्ञान ने जो कुछ भी हमें प्रदान किया है उसके पीछे सृजनशील चिन्तन और नये आयाम ही रहे हैं। यदि देखा जाय तो आज का कलाकार, शिल्पी, अभियन्ता, लेखक, डाक्टर, वैज्ञानिक, तकनीशियन, कवि आदि ये सब चुनौती भरे वातावरण में सांस ले रहे हैं। कारण यह है उन्हें भौतिक और नये–नये आविष्कार चाहिए।

किसी भी बालक का प्रारम्भिक विकास घर में होता है यहीं से उन्हें सर्वप्रथम अच्छे और बुरे अनुभव प्राप्त होते हैं। वह अपने समय का लगभग 3 चौथाई भाग परिवार में तथा मात्र 1 चौथाई भाग विद्यालय में व्यतीत करता है। बालक पारिवारिक वातावरण, परिवार के मुखिया के स्वतंत्र चिन्तन, स्वतंत्र व्यवसाय, सूझ–बूझ, निर्णय शक्ति और प्रभावकारिता पर निर्भर होता है। बालक परिवार का दर्पण है। जैसे पानी की बूंद में सूरज का प्रतिबिंब होता है, वैसे ही बालक में माता–पिता की नैतिक शुद्धता प्रदर्शित होती है। विद्यालय

में शिक्षक और घर में माता–पिता का उत्तरदायित्व है कि प्रत्येक बालक को सुखी बनाएं। अतः माता–पिता को चाहिए कि अपने बालकों के लिए उत्प्रेरक के समान कार्य करना, बालकों के प्रति जागरूक रहकर सहायता करना और समय–समय पर उनके सृजनशील विचारों और कार्यों का समर्थन भी करना चाहिए।

Role of creativity and Learning Style in Education

Dr. Anita Singh
Asst. Prof.(Education Dept.)

Mrs, Ritika Soni
Research Scholar (Education Dept)

Pt. Sunderlal Sharma (Open) University Chhatisgarh, Bilaspur

The term Learning Style speaks to the understanding that every student learns differently. Technically, an individual's learning style refers to the preferential ways in which the students observe and retain informations. Notion of individualized learning style has gained widespread recognition in education theory and classroom management strategy. Creative learners are the learners who think 'Out of the Box' .Creativity and learning Style are closely related and play a vital role to enhance learning. Creative learners have their own separate view point which categorises them into a special class. They have innovative spirit of exploring new boundaries and are capable to follow a merged style of learning and expand their thinking to new dimensions. Creative children have their own sets of needs and contributions to offer to the classroom, society and their families. While the creative child may share ideas which seem really "out there" to others, there is an upside to recognizing the creative thinkers in our lives. They are often great at generating new ideas and sparking healthy debates and they tend to have a keen sense of humour. Whether a child is creative, gifted or high-achieving, understanding how they learn and think can help all three develop a synergistic balance in their approach to learning. Learning Style and Creativity emerged as a very relevant pedagogic concept due to the varied nature of classes in terms of size, diversity curriculum and break through ICT.

CREATIVITY IN RABINDRANATH TAGORE

DR.ANUPA THOMAS
Assistant Professor
Dept. of English
Pt. Sundarlal Sharma (Open) University Chhattishgarh, Bilaspur

Rabindranath Tagore,a man of versatile genius and achievements,was the first Indian poet and writer who gained for modern India,a permanent place on the world literary map.He mainly wrote in Bengali and translated his own creations into English,often changing,transforming .His English renderings may be called transcreations.Tagore was a poet par excellence and all his writings—plays,short stories,novels,essays,letters,reminiscences and all his speeches,he gave in India and abroad are permeated with a rich fund of creative imagination.

Rabindranath Tagore began his literary career by writing in Bengali.Banphul is his first verse narrative.He has written about 7000 lines of verse before he was eighteen.His most remarkable set of writings is his 'Gitanjali'which he wrote in Bengali in 1909-10 ; which was later translated and put up in 1912.In November 1913,he was awarded the Nobel Prize for literature for the English translation of Gitanjali.An honorary doctorate was conferred on him by Calcutta University the same year.In 1914 he was Knighted and in 1940;he received D.Litt. at Shantiniketan from Oxford University.He had a great flair for writing and continued writing till to the very end of his life.

विद्यालय वातावरण एवं सृजनात्मकता

श्रीमती जयति साहू

मानव जीवन के सर्वांगीण विकास में शिक्षा की अपनी अहम भूमिका होती है। इसी प्रकार विद्यालय की सम्पूर्ण सफलता में भौतिक संसाधनों की व्यवस्था से भी अधिक विद्यालय के शैक्षिक वातावरण की होती है। विद्यालय का वातावरण सहज शैक्षिक रचनात्मक प्रेरणादायी एवं अनुशासित हो तो किसी भी लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। विद्यालय में विद्यार्थियों को खेलकूद, सहशैक्षिक, रचनात्मक गतिविधियों में संलग्न कर लेना उपर्युक्त उपाय है। हमें दंड, आलोचना, अभद्र भाषा, कार्यवाही, निष्कासन इत्यादि से बचना चाहिए। शिक्षा के पथ पर चलकर ही व्यक्ति सत्य की मंजिल पर पहुँचता है। शिक्षा द्वारा मानव को ज्ञानवान, कला कौशल युक्त और सभ्य बनाया जाता है।

वर्तमान समय में हमारे समाज में अनेक प्रकार के विद्यालय संचालित हो रहे है। इनमें सरकारी विद्यालय, गैर सरकारी विद्यालय, आवासीय विद्यालय, केन्द्रीय विद्यालय आदि प्रमुख है। इन विद्यालयों में शिक्षकों की योग्यता, विद्यालय की प्रतिस्पर्धात्मक प्रवशत्ति, अभिभावक का शैक्षिक एवं सामाजिक स्तर आदि के द्वारा वातावरण निर्मित होता है। प्रत्येक माता–पिता विद्यालय से यह अपेक्षा करता है कि विद्यालय का भौतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक वातावरण उच्च कोटि का हो ताकि उसमें अध्ययनरत विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकें। विद्यालय विद्यार्थियों को जीवन का वास्तविक अनुभव प्रदान करते हुए उनमें ज्ञान का उचित उपयोग अन्तनिर्हित क्षमताओं एवं योग्यताओं का विकास, शैक्षिक ज्ञान की अभिवृद्धि, नैतिक एवं चारित्रिक विकास करने के साथ–साथ शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने के लिये अभिप्रेरित करता है।

बालक का व्यक्तित्व बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक विकसित होता है तथा उसका अधिकांश समय विद्यालय में ही व्यतीत होता है। प्रत्येक बालक का पालन – पोषण एवं विकास निश्चित वातावरण में होता है, उपयुक्त वातावरण नहीं मिलने पर अनेक प्रतिभाएं अविकसित रह जाती है। अतः बालक को जैसा भौतिक वातावरण मिलता है। वैसी ही जन्मजात शक्तियॉं उसमें विकसित होती है। विद्यालय में विभिन्न आदतों, रूचियों, योग्यताओं एवं दृष्टिकोणों के बालक आते है। जैसे–जैसे बालक का शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है। वह बाहरी वातावरण के सम्पर्क में आता है। जिससे बालक में कुछ शारीरिक तथा मानसिक परिवर्तन होता है। इस परिवर्तन में विद्यालय वातावरण का प्रमुख योगदान होता है।

गोर्डन का मत है कि उचित सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण न मिलने पर मानसिक विकास की गति धीमी हो जाती है। बालक का मानसिक विकास सिर्फ बुद्धि से ही निश्चित नहीं होता है बल्कि उसमें बालक के ज्ञानेन्द्रियाँ, मस्तिष्क के सभी भाग एवं मानसिक क्रियाएँ आदि सम्मिलित होती है। अतः बालक वंश से कुछ लेकर उत्पन्न होता है। उसका विकास उचित वातावरण से ही सकता है। वातावरण से बालक की बौद्धिक क्षमता में तीव्रता आती है। अतः बालक की शिक्षा बुद्धि, मानसिक प्रक्रिया और सुंदर वातावरण पर निर्भर करती है। प्रायः यह देखने में आता है कि उच्च बुद्धि वाले बालक भी सही वातावरण के बिना उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते है।

विद्यालय के अच्छे वातावरण द्वारा जहाँ बालकों में सर्वांगीण विकास होता है, वहीं बालकों में सृजनशक्ति का भी विकास करती है। सभी विद्यार्थियों में कुछ न कुछ मात्रा में सृजनशीलता अवश्य होती है, कुछ में अधिक होती है, तो कुछ में सामान्य से कम। विद्यार्थियों में भी इस शक्ति के प्रस्फूटन एवं विकास के लिये उचित शैक्षिक वातावरण की आवश्यकता होती है। शिक्षकों द्वारा इस ओर ध्यान दे तो बालकों की सृजनात्मकता का विकास किया जा सकता है और उसे समाजोपयोगी बनाया जा सकता है। हर युग, हर काल तथा हर देश में सृजनशील व्यक्ति पाये जाते है।

विद्यालय वास्तव में मूलभूत संरचनात्मक सुविधाओं वाली एक प्रशासनिक इकाई है, जिस प्रकार माता–पिता का व्यक्तित्व एवं व्यवहार घर के वातावरण को प्रभावित करता है, उसी प्रकार अध्यापक विद्यालय के वातावरण को प्रभावित करते है। विद्यालय एवं कक्षा का रूचिपूर्ण व मैत्रीपूर्ण वातवरण विद्यार्थियों के स्वस्थ मानसिक एवं शारीरिक विकास में सहायक होता है। विद्यालय के सकारात्मक वातावरण से ही एक विद्यार्थी भावी जीवन में प्रगतिशील हो सकता है। इसलिए विद्यालय वातावरण को विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं सामाजिक जीवन की नींव कहा जा सकता है।

एक सृजनशील विद्यार्थी एक कलाकार, संगीतज्ञ, लेखक, वैज्ञानिक, खिलाड़ी कोई भी सश्जनात्मक चिंतक हो सकता है। सृजनात्मक चिन्तम में "नया" शब्द पर विशेष बल दिया जाता है। सृजनात्मक बालक अपनी खोज तथा सिद्धांतों के अध्ययन के लिए नए रास्तों का उपयोग करता है। सृजनशील विद्यार्थी के व्यवहार में मौलिकता होती है। उसके अंदर स्वयं निर्णय लेने की क्षमता होती है। वे किसी भी कार्य को गंभीरता से लेते है और उत्तरदायित्व ढंग से करते है। उन विद्यार्थियों में वस्तुओं से निहित संबंधो को देखने और संबंध स्थापित करने की योग्यता होती है।

सृजनात्मकता की प्रवृत्ति बालक में जन्मजात होती है, परन्तु फिर भी इस प्रवृत्ति को बाहरी रूप से बढ़ावा देने की भी परम् आवश्यकता होती है। यदि समय पर इसे आवश्यक प्रोत्साहन नहीं मिल पाता, तब इससे बालक की जन्मजात क्षमता दबी रह जाती है। अतः इस आंतरिक क्षमता को निखारने की जरूरत होती है। एक शिक्षक होने के नाते यह हमारा कर्तव्य है कि हम बच्चों के भीतर मौजूद सृजनात्मक क्षमताओं की पहचान कर उनका विकास करें। उन्हें अच्छा वातावरण देकर उनमें निहित सृजनात्मक का विकास करें। जिसमें से कुछ इस प्रकार है।

- विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता देना।

- अपने विचार का आकलन करना तथा उनमे से उपयोगी विचारों का चुनाव करना। जोखिम लेने की क्षमता का विकास करना।
- बालकों का खुद पर विश्वास बढ़ाना कि वे जो कर रहें है वह ठीक है तथा उचित है।
- बालकों की यह चुनने में मदद करना कि उन्हें क्या पसंद है?
- बालकों की यह चुनने में मदद करना कि उन्हें क्या पसंद है?
- स्वयं सृजनात्मकता सोच के साथ कार्य करके, बालकों के सामने आदर्श प्रस्तुत करना।
- कक्षा शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों से प्रायः पूछे कि क्या कोई इस समस्या का नया या भिन्न उत्तर देना चाहता है। इस प्रकार के उत्तरो को कक्षा चर्चा में शामिल करे।
- स्वयं सृजनात्मक सोच के साथ कार्य करके बालकों के सामने आदर्श प्रस्तुत करना।
- यदि कक्षा में विभिन्न विचार आ रहे है तो उनके आधार पर संवाद को प्रोत्साहित करें।
- कई बार ऐसे भी प्रदत्त कार्य दे जो मूल्यांकन का हिस्सा न हो, बल्कि उनमें रचनात्मक अभिव्यक्ति की संभावना हो।

विद्यार्थियों में सृजनात्मक चिन्तन में संवर्धन का प्रयास कुछ युक्तियों तथा उपकरणों का उपयोग करके किया जा सकता है।

इनमें से प्रमुख है–

संवेदनशीलता का प्रशिक्षण – इसके अंतर्गत भिन्न और नए तरीके से सोचने का अवसर दिया जाता है। जैसे आप अपने घर के आस–पास कैसे ध्वनियॉं सुनते है? आप बादलों में क्या–क्या आकार देखते है।

प्रेक्षण :– बच्चों को अपने आस–पास की चीजों को देखने प्रेक्षण करने तथा इन्हें लिखने के लिए प्रेरित करना।

शब्द प्रयोग :– समान अक्षर से प्रारंभ होने वाले विभिन्न शब्दों से वाक्यों का निर्माण।

बहुल प्रयोग – विभिन्न वस्तुओं जैसे पेंसिल, कप, बल्ब, समाचार पत्र, इत्यादि के सामान्य तथा असामान्य उपयोगों की जिन्हें हम सोच सकते है, सूची बनाना।

कहानी लेखन– बच्चों को कुछ वाक्य देकर, उनसे कहानी पूरी करने को कहना या अलग ढंग से लिखने को कहना।

अन्वेषश :– भोजन हेतु नया व्यंजन, संगीत उपकरण, कलम, स्टैंड, किताब पर चिन्ह लगाने की कलम या दैनिक उपयोग की चीज बनाना।

वर्गीकरण :– विभिन्न प्रकार की वर्गीकरण और अवधारणों का वर्गीकरण।

अनुकूल विद्यालय वातावरण होने पर सश्जनशील विद्यार्थियों की शिक्षा को ग्राहम वालेस ने चार दशक पहले साक्षात्कारों, प्रश्नावलियों तथा संस्मरणों की सहायता से प्रख्यात सश्जनात्म्क चिंतको की चिन्तन प्रक्रिया में निहित चरणों का अध्ययन किया। उन्होने पता लगाया कि यद्यपि चिन्तन में वैयक्तिक भिन्नताएँ होती है तथापि इसका एक क्रमबद्ध स्वरूप भी होता है। उन्होंने पांच चरणोः तैयारी, उद्‌भवन प्रदीप्तिकरण, मूल्यांकन तथा समीक्षा का उल्लेख किया है।

तैयारी :– चिंतन करने वाला व्यक्ति, समस्याओं का रेखांकन करता है तथा समस्या समाधान के लिए आवश्यक सामग्रियो तथा प्रदत्तों को एकत्र करता है। कई दिनों, सप्ताहों तथा महीनों तक सतत् प्रयास के बावजूद समस्या का हल नहीं मिलता है। चिंतक जानबूझकर या अनिच्छा से अपने को इस प्रक्रिया से अलग कर लेता है। यहाँ से दूसरे चरण की शुरूआत होती है। यहाँ मानिसक विन्यास तथा कार्यात्मक जड़ता से व्यक्ति को दूर रहने की जरूरत होती है।

उद्धवन– जैसे ही व्यक्ति समस्या से हट जाता है तथा उसके बारे में नहीं सोचता है, त्यों ही मानसिक सेट प्राकार्यत्मक स्थिरता या अन्य विचार, जो समाधान को बाधित करते है, कमजोर पड़ जाते है। शायद थकान या समस्या में अधिक तल्लीनता भी इस अवधि में कम हो जाती है। सृजनात्मकता चिन्तन में संलग्न अचेतन चिन्तन प्रक्रिया भी इस चरण में कार्य करने लगती है।

प्रदीप्तीकरण– जब कहीं से कुछ नहीं होता, तो अंर्तदृष्टि के रूप में समस्या का संभावित समाधान दिखता है। प्रदीप्तन, ग्राह्य के साथ समाधान के एक अचानक विचार के रूप में चेतना में घटित होता है।

मूल्यांकन – जो समाधान प्राप्त होता है, उसकी उपयुक्ता की जाँच या परीक्षण किया जाता है। जो सूझ मिलती है वह अक्सर असंतोषदायी भी होती है, जिनमें परिमार्जन आवश्यक होती है।

पुनःसमीक्षा :– यदि हम संतोषदायी है समाधान तक नहीं पहुँचा पाते तो पुनः समीक्षा आवश्यक हो जाती है।

अतः हमने विद्यालय वातावरण में सृजनात्मक के जिन चरणों का विवेचन किया है, उनसे इनके चरणों की एक सामान्य तस्वीर मिलती है, जो अत्यंत सृजनशील का प्रतिभावन लोगो द्वारा, समस्या समाधान के लिय अपनायी जाती है। इस प्रकार शिक्षकों द्वारा बालकों को विद्यालय में अच्छा वातावरण देने का प्रयास करना चाहिए। शिक्षकों द्वारा बालकों को अपनी जिज्ञासा व्यक्त करने की छूट होनी चाहिए, क्योंकि विद्यार्थी की सहज जिज्ञासा सृजनशील व्यवहार की जननी होती है तथा ऐसा व्यवहार नित नवीन प्रयोगो व खोजो के लिए एक प्रकार से अभिप्रेरित करती रही है।

संदर्भित ग्रंथ :–

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातवरण का अध्ययन– बलवान सिंह, डॉ. रविकान्त यादव

संज्ञान, अधिग एवं शिक्षण– द्विवर्षीय बी.एड. मुक्त पाठयक्रम

हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्य के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सश्जनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन – श्रीमती श्वेता राजोरिया, महादेव कुमार

वर्तमान शिक्षा-पद्धति एवं यौगिक तनाव प्रबंधन

डॉ. कप्तान सिंह
(डी. लिट् – योग)
सहायक प्राध्यापक (योग विज्ञान) विभाग
पंडित सुंदरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

सा विद्या या विमुक्तये का उद्घोष भारतीय शिक्षा पद्धति के मूल मर्म को अभिव्यक्त करता है। प्राचीनकाल के ही भारतीय शिक्षा पद्धति मानवीय मूल्यों के सृजन, संरक्षण एवं संवर्धन के प्रति अग्रशील रही है। काल प्रवाह के साथ युग युगांतर से प्रवाहित हमारी शिक्षा पद्धति वर्तमान कलेवर मैं जहाँ एक ओर विविध रूप में अवतरित होकर जीवन एवं जगत की चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत कर रही हैं, वही दूसरी ओर वह सैकड़ों विविध चुनौतियों से आबद्ध और अवरुद्ध प्रतीत हो रही है। प्राचीन काल में शिक्षा का वातावरण पूर्णतः आध्यात्मिक, मनोवैज्ञानिक, तपोनिष्ठ एवं आनन्दकारी होता था। गुरु–शिष्य सम्बन्ध स्वस्थ परंपरा का अनुगमन एवं सृजन करते थे, इसका मूल कारण था कि प्राचीनकाल में शिक्षा का वातावरण पूर्णतः आध्यात्मिक था। धर्माधारित अर्थ एवं काम व्यवस्था से पूरित समाज को मोक्ष मार्ग की ओर प्रेरित एवं अग्रसर करना शिक्षा व्यवस्था की आधारशिला थी जो गुरु एवं शिष्य की चेतना के परिष्कार एवं विस्तार में सहायक हुआ करती थी. योग आधारित शिक्षा व्यवस्था तनावमुक्त एवं रसमय थी। फलतः प्रतियोगिता के स्थान पर सहभागिता, स्व के स्थान प्रभाव, संग्रह के स्थान पर त्याग, लोभ के स्थान पर अपरिग्रह एवं सारतः भोग के स्थान पर योग को वरीयता दी जाती थी। इस प्रकार शिक्षा व्यवस्था में समरसता एवं सामंजस्य का वातावरण होता था। वर्तमान शिक्षा पद्धति अपनी तमाम अच्छाइयों के साथ तनावग्रस्त होने के कारण जहाँ अपने लक्ष्य से भटकती प्रतीत हो रही हैं, वही दूसरी ओर तनाव के कारण शिक्षक, शिक्षार्थी एवं अन्य सम्बंधित लोग जीवन के नैसर्गिक शांति एवं आनंद से वंचित होते जा रहे हैं। सारतः वर्तमान शिक्षा पद्धति के विविध आयाम तनाव ग्रस्त प्रतीत हो रहे हैं तथा योग साधना की विविध तकनीकियों के माध्यम से वर्तमान शिक्षा पद्धति को तनावमुक्त किया जा सकता है।

मूल्यपरक शिक्षा के अभाव सृजनात्मकता

डॉ. अमित कुमार पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

मूल्यपरक शिक्षा की आज जितनी आवश्कयता अनुभव की जा रही है उतनी पहले कभी नहीं थी। आज हम एक गहन संक्रमणकाल से गुजर रहे है मूल्य परक शिक्षा के अभाव में सृजनशीलता का विकृत रूप ही दृष्टिगोचर होता है। हमारे प्राचीन मूल्यों में कुछ तो पूर्णतः विघटित हो चुके है और कुछ बड़ी तेजी से विघटित हो रहे है किन्तु नए मूल्य अभी स्थापित नहीं हो पाए है। आज सदाचरण, सत्य अहिंसा, प्रेम शांति

जैसे शाश्वत मूल्यों की महति आवश्यकता है, यह मूल्य तो व्यक्तिगत उत्थान के लिए अपितु सामाजिक व राष्ट्रीय प्रगति एवं शान्ति के लिए भी परम आवश्यक है।

हमारी प्राचीन परंपरा व संस्कृति में परिपोषित एवं व्यक्तिगत अस्मिता एवं विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक परिस्थितियों से नियंत्रित जीवन मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा में शिक्षण संस्थाओ का विशिष्ट योगदान रहा है किन्तु आज विभिन्न सामाजिक आर्थिक कारणों से अधिकांश संस्थान स्वयं को धर्मसंकट की स्थिति में ला रखे है।

नई शिक्षा नीति में मूल्यों के गिरते स्तर पर चिंता व्यक्त करते हुए मूल्यपरक शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है आज शिक्षण व्यवस्था में सृजनात्मकता व गुणात्मकता की मांग की जा रही है। सुधार के लिए नैतिक मूल्यों में समन्वित सृजनशील दृष्टिकोण की आवश्यकता है वर्तमान शिक्षा पद्धति का व्यवसायीकरण पाश्चात्य जगत की देन है छात्रों में मूल्य शिक्षा के अभाव में सृजनात्मकता का विकास नित नवीन विपत्तियों का कारण ही सिद्ध होता है। प्रस्तुत शोध पत्र वर्तमान शिक्षा पद्धति में नवाचार के साथ मूल्य परक शिक्षा की उपादेयता पर समीक्षात्मक अध्ययन का निदर्शन है।

वर्तमान परीक्षा पद्धति के दोष तथा सृजनात्मक दृष्टि से सुझाव

डॉ. रम्भा कुमारी
व्याख्याता
करीम सीटी कॉलेज, जमशेदपुर

शिक्षा का मूल उद्देश्य छात्रों का सर्वांगीण विकास करना, ज्ञानोपार्जन करना एवं उनकी प्रवृत्तियों में निरन्तर परिमार्जन एवं संशोधन लाना होता है जो आज विलुप्त होता जा रहा है क्योंकि आज की समस्त शिक्षा प्रणाली परीक्षा प्रणाली पर आधारित है। परीक्षा के लिए छात्रों को तैयार करना और विभिन्न विषयों में उनका मूल्यांकन करना तथा डिग्री प्रदान करना आज की शिक्षा का उद्देश्य हो गया हैं वर्तमान शिक्षा प्रणाली ने शिक्षा को साधन और साध्य दोनों बना दिया है अतः परीक्षा प्रणाली में सुधार तभी सम्भव हो सकता है। जब शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों को पुनः प्रस्थापित किया जाए। वास्तविकता यह है कि शिक्षा का उद्देश्य मात्र परीक्षाएँ उत्तीर्ण करना है बल्कि वास्तविक ज्ञानार्जन है जिसके लिए परीक्षा एक साधन है साध्य कदापि नहीं।
वर्तमान परीक्षा पद्धति के दोष –
शैक्षिक विषय– वस्तुओं की जाँच करने के लिए मौखिक एवं लिखित दोनों प्रकार की परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है और इसके लिए निबन्धात्मक, लघु प्रश्न एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न सभी का उपयोग किया जाता है परन्तु तमाम विशिष्टताओं से परिपूर्ण होने के बावजूद वर्तमान परीक्षा पद्धति दोषों से युक्त है। 20 वीं शताब्दी के प्रारम्भिक चरण से ही परम्परागत परीक्षा प्रणाली की कटु आलोचना की जा रही है। वर्तमान परीक्षा प्रणाली का सबसे बड़ा दोष उसका साध्य बन जाना है। इसके मुख्य दोष निम्नलिखित है।
(1) तर्क शक्ति तथा विश्लेषण जैसे उच्च स्तरीय कौशलों की जाँच में अक्षम
(2) ग्रेड/अंक प्रणाली में पूर्ण प्रकटीकरण और पारदर्शिता का अभाव

वर्तमान शिक्षा पद्धति में तकनीकी शिक्षा का महत्व

डॉ मनोज कुमार तिवारी
सहायक प्राध्यापक, गणित विभाग
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

शिक्षा जीवन के बुनियादी जरूरतों में से एक महत्वपूर्ण पहलू है।आज समाज में विज्ञान और तकनीक के बिना एक कदम भी चलना मुश्किल है।भारत जैसे विकासशील देश में तो तकनीकी और विज्ञान के विकास की और भी अधिक जरुरत महसूस की जाती है।

ये विज्ञान और प्रौद्योगिकी ही है, जिसने अन्य कमजोर देशों को भी विकसित और ताकतवर बनने में मदद की है। मानवता की भलाई के लिए और जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए हमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी की मदद लेनी ही पड़ेगी। यदि हम तकनीकों जैसे– कम्प्युटर, इंटरनेट आदि की मदद नहीं लेते तो हम भविष्य में कभी भी आर्थिक रुप से मजबूत नहीं होंगे और हमेशा पिछड़े रहेंगे। यहाँ तक कि हम इस प्रतियोगी और तकनीकी संसार में जीवित भी नहीं रह सकते।

चिकित्सा, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, खेल, नौकरियाँ, पर्यटन आदि के क्षेत्रों में भी विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने आज पैठ जमा ली है।विकास के सूचकांक हमें बताते हैं कि किस तरह यह हमारे जीवन में रच बस गये हैं।यदि हम पुरातन जीवन पद्धति और आधुनिक जीवनशैली से तुलना करें अन्तर स्पष्ट दिखाई देता है।चिकित्सा, गणित, मनोविज्ञान, अभियांत्रिकी आदि के क्षेत्र में उच्च वैज्ञानिक और तकनीकी उन्नति ने जीवन को सरलीकृत कर दिया है, जो पहले संभव और दुरूह सा लगता था। जिन बीमारियों को असाध्य माना जाता था, वह आज साधन और तकनीक के कारण साध्य हो गये हैं। यह शोध पत्र गणित, कम्प्युटर, चिकित्सा, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, खेल एव खगोलीय विज्ञान में किस तरह तकनीकी शिक्षा की जरूरत है और वह कितना महत्वपूर्ण है, इसको दर्शाता है।

DIGITAL EDUCATION AND CREATIVITY FOR THE STUDENTS IN THE 21st CENTURY

Dr. Rituraj Trivedi
Assistant Prof. English Department

Dr. Preeti Rani Mishra
Assistant Prof. SoS in Library & Inf. Science

Pt. Sundarlal Sharma (Open) University, Chhattisgarh, Bilaspur (C.G.)

Our present system of education is a time machine preparing students for yesterday. As times change, we are called to adapt to this new landscape. Universal education was designed to meet the social and economic needs of the industrial revolution. The social, civic and economic realities of today and tomorrow are developing within a digitally networked society. Passive, rote and standardized learning are not modeling the kinds of creative and collaborative environments that students will be expected to work in. Perhaps more importantly, being digital

entails new ways of thinking and communicating. It requires new forms of social organization. Technology may be a powerful driver of change, but it is only a more evolved social structure, the ways in which people interact within all facts of society, that can capture the potential of the technology to transform learning and productivity.

In present education, digital technology and 21st century learning has become quite fashionable. Schools that have the resources to integrate digital tools are eager to do so. But digital tools are only the beginning. They are intimations of greater change to come.

Creativity is an exploration of the possible. In times of rapid change, exploring the possible becomes an essential skill. We do not have maps for the territory of tomorrow. As a result, all students must become explorers of the emerging world. The best way to prepare for the emergence of the future is to learn how to be comfortable with uncertainty, one must remain fluid, receptive and creative- in a word: playful.

Challenges of the Marking Scheme in Evaluation: Edging the Harmony

Dr. Sisirkana Bhattacharya
Asstt.Prof. DIET, Durg, Chhattisgarh

Examinations are indices to progressive construct of an individual student. It is an encounter with the child's ability to learn, understand and reproduce. As an exemplary practice the learning outcome also expects the learner to apply the competencies appropriately. The traditional mode of scoring a student's answer sheet or evaluate his / her responses on the basis of a question paper that has been weighted on a blue print is mandatory to the present system of certification. CCE tried to eradicate some of the constraints of assessing a student's academic achievements through grades resulting in the marginalization of the gifted child, since grading minimized discrimination unaware of the identity crisis that has been generated within the academic system.

In fact, neither marks nor grades have a direct or accrued relationship with constructive creativity of the child because in any subjective response the creativity of the child is still hued with the cosmetic demands of the question paper. Though word limits and proposed weightage to the understanding about development of a concept in the child is liable to every kind of accountability, scoring system in the examinations is at least a clue to the performance of the teacher as well as the student. This paper is an attempt to probe into the rationale and reasons that integrate the relationship between learning, certification and disseminated outcomes of learning. The objective harmony of gauging the gaps in learning is an adept challenge that could be located within and beyond the prospects of the education system and its demands.

BETTER EDUCATION THROUGH INNOVATION (BETI)

PRATIBHA J. MISHRA
Department of Social Work,School of Social Sciences
Guru Ghassidas Vishwavidayalaya Koni, Bilaspur, (C.G.)

Education empowers people for their role in society and therefore is of vital importance to promote the sustainable development of our global community. The Millennium Development Goals, adopted by the UN General Assembly in 2000, and the WEHAB Initiative[1] proposed by the UN Secretary General Kofi Annan during the 2002 World Summit on Sustainable Development (WSSD) in Johannesburg both underscore the role of education in improving peoples' lives. While it is broadly understood that literacy and education for all plays a crucial role in preparing people for their future in a highly connected, interlinked and globalized world; higher education in particular occupies an important position in shaping the way in which future generations learn to cope with the complexities of sustainable development.

An educated country is a developed country. Literacy level plays a major role in the economic development of a nation. If people are literate, then there will be minimum violence in the country. Literacy leads to good employment opportunities. If literacy level is high in a nation, then there will be more number of entrepreneurs and the flow of money will be huge. If new enterprises come up, the economy of the country grows with the amount of tax collected. New enterprises lead to more employment generation and in turn reduce the unemployment rate. A Nation with a low unemployment rate will develop very rapidly.

KEY WORDS:-Education, Literacy, Economic Development , Innovation, Empowerment.

विद्यालय वातावरण एवं सृजनात्मकता

अंजु त्रिपाठी (शोधार्थी)
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

विद्यालय सामुदायिक केन्द्र है जो चारों ओर जीवन और शक्ति का संचार करता है। विद्यालय एक ऐसा परिक्षेत्र है, जहाँ विभिन्न घटकों जैसे प्रशासन समिति के सदस्य, प्राचार्य, शिक्षक, छात्रों का एक समुदाय बन जाता है जो एक ओर समाज की आवश्यकताओं का प्रतिबिम्ब बना रहता है तो दूसरी ओर छात्रों के उसके उद्देश्य पूर्ण करने में सहायक बनता है। विद्यालय संगठन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है जो छात्रों और समाज की दशा बनाने कि अहम् भूमिका अदा करता है। सामान्यतया मनोवैज्ञानिक शोधों के आधार पर कहा जा सकता है कि विद्यालय का वातावरण या परिवेश जो छात्रों को सक्रिय बनाने हेतु प्रोत्साहित करता है, जो छात्रों की व्यक्तिगत प्रकृति को अधिक महत्व देता है, जो स्वीकार करता है कि छात्रों में विभिन्नता वांछित है, जो यह मानता है कि छात्र गलती करेंगे, जो छात्रों की अपूर्णता को स्वीकारता है। व्यक्तिगत, खुलेपन और वैयक्तिक विशेषताओं पर विश्वास करता है छात्रों में यह अनुभव प्रदान करता है कि उन्हें

सम्मान मिल रहा है व उन्हें स्वीकारा जा रहा है। छात्रों को अन्वेषण एवं अनुसंधान करने के लिए प्रोत्साहित करता है। स्वमूल्यांकन को प्रोत्साहित करता है अर्थात् जो छात्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है वही अधिगम में सहायक होता है। सृजनात्मकता मस्तिष्क द्वारा की गयी मानसिक गतिविधियों की एक श्रृंखला है। सोच एक जटिल मानवीय व्यवहार है जो उसे अन्य प्राणियों से अलग करती है। रचनात्मक से आशय नए तरीकों से कुछ करना या बनाना है जो पहले से ज्ञात नहीं है। सृजनात्मकता शाला वातावरण को उस शाला के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो अपने छात्रों की सृजनात्मकता को बेहतर बनाने एवं विकसित करने के लिए सुधार एवं समर्थन करने में समक्ष हो एवं उन्हे भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के समक्ष बनाए। सृजनात्मकता वातावरण छात्रों को सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्वतंत्रता तथा सुरक्षा प्रदान करता है। छात्रों एवं शिक्षकों के मध्य सकारात्मक संबंध सृजनात्मकता को बढ़ावा देता है। शालेय वातावरण विद्यालय के मनोवैज्ञानिक – सामाजिक परिवेश को प्रदर्शित करता है

विद्यालय संगठनात्मक वातावरण छात्रों के सृजनात्मक प्राप्तांकों को सार्थक रूप से प्रभावित करता है शाला में आयोजित की जाने वाली पाठ्य–सहगामी क्रियायें जो शाला के अंदर एवं बाहर आयोजित की जाती है। उन गतिविधियों में भाग लेने वाले विद्यार्थी की आकांक्षा एवं दक्षता उच्च स्तर की होती है।

MODERN EDUCATION SYSTEM AND IMPACT OF RIGHT TO EDUCATION- A STUDY

VIDHI SHAMBHARKAR
Assistant Professor, Department of Law
Guru Ghasidas University, Bilaspur (CG)

Education is the primary vehicle for human, economic and social development, profiting both the individual and society. Education is the solution of every problem. Indian Constitution says about socio economic justice. The Constitution(eighty-sixth Amendment)Act,2002 insert Art.21-A in the Constitution of India to provide free and compulsory education to all children in the age group of six to fourteen years as a fundamental right in such a manner as the state may, by law , determine. This Act provides free and compulsory education to every section of the society. The Supreme Court in Mohini Jain and Unnikrishnan cases recognized the right to education is an implied fundamental right. This Act provides the scope to pursue and complete the elementary education without any kind of fee or charges or expenses. Definitely it is the revolutionary change in our society and education system. So many people of society are not so aware about the importance of education in human life and if they are aware about it then due to lack of resources or because of their financial conditions they can not get even the elementary and compulsory education. In modern education system, so many innovative ideas are introduced daily for betterment of education and it gives a creative effect in student's life. It gives creativity to teachers also with new innovative teaching methods. Now when elementary education is compulsory then obviously every section of the society can connect with the system, they can know their rights, they can fight for their rights and of course they will be the part of modern developed India. Because sustainable development is the concept where every section of the society should develop together with overall development. In this paper we'll study about the above concept.

KEYWORDS- education, Indian Constitution, education system, fundamental rights, sustainable development.

A Paradigm shift in Teaching process and Teacher

Priyanka Kewalramani
Assistant Professor
Guru Ghasidas University Bilaspur (C.G.)

A teacher to be effective should always be a learner. If he ceases to be a student, he ceases to be a good teacher- Dr.S Radhakrishnan.We can see that the present scenario of teaching learning process is changing. Earlier it was believed that teaching and learning ware teacher based process, but after the change of perspectives, it became child focused. Today's teacher is of course trying to bridge gap between theory and Practice to fulfil the missing links. This article emphasises on the innovative changes of the teaching and shifts in teacher's role. The teacher of today is trying not only to convert teaching in the transformational process., but also is trying to transmit the knowledge to the learner, to generate ideas; by using new strategies and technologies in teaching. Now teacher has become a supporter, helper, partner and friend to learner. A successful teacher today needs to be on the lookout for all technological advances and especially those that have an educational potential. Teacher also needs to embrace the new innovative leadership and pedagogy across all layers and roles of the teaching and learning community: school management, all faculty, students, parents etc. She/he should also know the system, accept failure, promote a learning culture, and above all, put the student and their learning needs at the heart of their teaching mission.

DEMERITS OF PRESENT EXAMINATION SYSTEM AND IT'S SOLUTION FROM CREATIVITY POINT OF VIEW

Prof. (Dr.) Dinkar Kumar Dixit
Principal
Post Graduate Department of Education

Miss Anamika Pandey
Trainee Teacher

ABS Academy, J.P. Avenue, Sagarbhanga, Durgapur

"The highest education is that which does not merely give us information but makes our life in harmony with all existence" this famous quote of noble laureate Rabindranath Tagore , signifies the real aim of education . Education is the essential part of human life . Education gives meaning to our life , it enables the growth and development of our mind and intellect .The level of educational achievement by an individual is now being measured by taking examinations . Examinations are like a surgeon's knife and so they are called necessary evil. Nobody can escape the examination. Actually , life itself is a continuous examination. We all have to give tests at all stages of our life. The present system of examination in our educational set up was

proposed by the British. They wanted to produce clerks who would help them in their day to day administration. Things have changed completely with the advent of freedom. The aims of education have changed. So the system of examination also, therefore, must be changed.

The prevailing system of examination inspite of having some advantages is being criticised everywhere. It suffers from a large number of drawbacks and requires complete overhauling. It has failed to deliver the good things which it is supposed to give. The examination system is not the real test of the student's ability. It does not ensure accurate results in judging the real worth of an examinee. It is rather a game of chance. The mood and whims of examiners count more than any rules or regulations. The standard of marking varies from examiner to examiner and even with the same examiner at different times. Again, the ability and worth of a student cannot be judged through a three-hour test. So the examination system must be reformed .

It is unfortunate that India is one of the top countries in the World's suicidal tendency role and given the breakneck nature of present day life things may only get worse a few years down the line. Perhaps it is the duty of the ones in Power as well as the Parents and Teachers in India to make sure that such incidents are less in number and we have a young generation that is doing what it loves to do rather than trying to achieve something that is clearly beyond its capabilities and then fail and end oneself while trying to get to that impossible aim.

Therefore, the present system of education which is suffering from glaring defects requires speedy reforms. The educationists in the country are already trying to incorporate certain reforms in this system. In fact, the system has already been changed in some of the Universities in India. Other Universities are thinking of introducing the new reforms. The old system of marking is being replaced by a grading system. This makes the marking of the answer-books more objective. Question papers are being so framed that they cover the entire syllabus and discourage guess work and cramming. Sessional work is assessed regularly and the marks obtained during the various terms during the year are counted towards the making up of the final grade. The concept of 'Open book examination' is also being accepted and put into practice in some of the universities in the country. All these reforms are expected to make the examinations more reliable, objective and valid

Key – Words: Harmony , Intellect , Surgeon's Knife , Necessary Evil , Criticism , Overhauling, Whims , Grading System , Objective , Cramming , Sessional Work , Open Book Examination.

विद्यालय वातावरण एवं सृजनात्मकता

श्रीमती जयति साहू
सहायक प्राध्यापक
मनसा शिक्षा महाविद्यालय कोहका रोड, कुरूद, भिलाई, (छ.ग.)

बालक की शिक्षा बुद्धि, मानसिक प्रक्रिया और सुंदर वातावरण पर निर्भर करती है। अतः शिक्षा के क्षेत्र में बालकों का सही विकास उपयुक्त शैक्षिक वातवरण पर निर्भर करता है। प्रायः यह देखने में आता है कि उच्च बुद्धि वाले बालक का भी सही वातावरण के बिना उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते है। विद्यालय विद्यार्थियों को जीवन का वास्तविक अनुभव प्रदान करते हुए उनमे ज्ञान का उचित उपयोग अन्तर्निहित क्षमताओं एवं योग्यताओं का विकास, शैक्षिक ज्ञान की अभिवृद्धि, नैतिक एवं चारित्रिक विकास करने के साथ साथ शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने के लिए अभिप्रेरित करता है। बालक का व्यक्तित्व बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक विकसित होता है तथा उसका अधिकांश समय विद्यालय में ही व्यतीत होता है। प्रत्येक बालक का पालन–पोषण एवं विकास निश्चित वातावरण में होता है, उपयुक्त वातावरण नहीं मिलने पर अनेक प्रतिभाए अविकसित रह जाती है। अतः बालक को जैसा भौतिक वातावरण मिलता है वैसी ही जन्मजात शक्तियॉ उसमें विकसित होती है। शिक्षा एक ओर जहां बालक का सर्वांगीण विकास करती है। वहीं शिक्षा मनुष्यों मे सृजनशक्ति का भी विकास करती है। शिक्षकों द्वारा विद्यालय में बालको को एक प्रेरणात्मक वातावरण की व्यवस्था की जाए ताकि उनमें सृजनात्मक का उचित विकास हो सके। अतः विद्यालयीन वातावरण द्वारा बच्चों के भीतर मौजूद सृजनात्मक क्षमताओं की पहचान कर उनका विकास किया जा सके।

वर्तमान शिक्षा पद्धति एवं योग

प्रशांत उपाध्याय
शोधार्थी

विजय गारूडिक
शोधार्थी

डॉ. सी.व्ही. रमन् विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

वर्तमान शिक्षा प्रणाली वशहंदम् रूप सुरसा के मुख के समान आकशति धारण करते जा रहा है और उसके बावजूद यह देखा जा रहा है कि स्कूल शिक्षा विभाग में तथा उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों में शिक्षा गुणवत्ता सुधार की दिशा में विभिन्न स्तर पर अनेक प्रयास किए जा रहे हैं अनेक संगोष्ठिया, कार्यशाला एवं शिक्षकीय तथा गैर शिक्षकीय कार्यों का बोझ छात्रों पर बढ़ते ही जा रहा है साथ ही विद्यार्थी भी चूँकि एक सामाजिक प्राणी है और वह स्कूल में 6 घंटे व्यतीत करने के बाद स्कूल के बाहर समाज, परिवार के पढ़ाई के प्रतिकूल माहौल के बीच में अधिकांश समय गुजारता है, जिससे उनके ऊपर बौद्धिक, मानसिक, सामाजिक थकान बढ़ती है। जिसको बिना किसी प्रामाणिक मनोचिकित्सा या सामुदायिक सहयोग के सुधारा जा सकना असंभव प्रतीत होता है।

वर्तमान वैज्ञानिक युग में भी यह प्रमाणित है कि योग का पवित्र प्रभाव शरीर, मन, चेतना और आत्मा को संतुलित करता है। योग शिक्षा जितनी कम उम्र से ली जाये, उतना ही शरीर को ज्यादा लाभ मिलता है। बच्चों का शरीर बड़ों की तुलना में ज्यादा लचकदार होता है इसलिए बच्चे चीजों को जल्दी और आसानी से सीख जाते हैं। स्वास्थ्य सहलाकार योग की सलाह देते रहते हैं लेकिन समय रहते अनुसरण ना किया जाए तो बाद में बच्चे सुनते नहीं हैं। आज की तुलना में पहले के बच्चों के पास घर से बाहर खेलने के कई मौके होते थे लेकिन आज के बच्चे गैजेट्स के अलावा शिक्षा के दबाव के कारण कहीं अपना ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते। जिस कारण बच्चों में मानसिक उदासीनता देखी जा रही है जिसका मूल कारण है तन–मन का अस्वस्थ होना। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ शिक्षा का निवास सम्भव है और यह काम योग से संभव है। योग से शरीर को रोगों से मुक्ति मिलती है और मन को शक्ति देता है। योग बच्चों के मन–मस्तिष्क को उसके कार्य के प्रति जागरूक करता है।

इसलिए विद्यार्थियों को प्रतिभावान बनाने के लिए अर्थात विद्यार्थियों में प्राकृतिक रूप से चेतन मन मस्तिष्क के साथ–साथ अवचेतन मन मस्तिष्क के रूप के छिपी अपार प्रतिभा क्षमता तथा शिक्षा गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए, शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए शिक्षकों के साथ–साथ सामुदायिक सहयोग के रूप में परिवार, समाज, नेताओं, अधिकारियों आदि सब का मनोविज्ञान के अनुरूप सकारात्मक सहयोग अनिवार्य है।

शिक्षा में सृजनात्मकता व कौशल विकास का महत्व

डॉ. श्रीमती सुनीला एक्का
सहायक प्राध्यापक (राजनीतिशास्त्र)
शासकीय अग्रसेन महाविद्यालय बिल्हा, जिला बिलासपुर छ.ग.

आजादी के वर्षों बीत जाने के बाद भी अपनी शिक्षा प्रणाली की उस सृजनशीलता का विकास नहीं कर पाये, जो रोजगार में सहायक बनती और शिक्षित युवकों को आत्मनिर्भर बनाती। आजादी के बाद हमारी शिक्षा व्यवस्था में मूलभूत परिवर्तन हुए। परिवर्तन किये जाने की न सिर्फ आवश्यकता महसूस की जाती रही है, वरन् इस प्रकार के परिवर्तन किये जाने से शिक्षक, अभिभावक एवं प्रबुद्धवर्ग द्वारा मांग की जाती रही है। इन सबके बावजूद इस पहल अर्थात् सुधारों की पहल में पिछड़ गये, जो सुधारों की पहले की गई थी, वे इतनी अव्यवहारिक थी कि इसका प्रतिकूल या उल्टा प्रभाव पड़ा। इनसे सृजनशीलता का विकास तो नहीं हुआ, बल्कि उल्टे छात्रों एवं अभिभावकों पर निरर्थक बोझ ही बढ़ा है। आज मध्यम्वर्गीय युवा पढ़–लिखकर नौकरी के सिवा किसी अन्य विकल्प की दौड़ के बारे में सोंच नहीं पाता है। ऐसे में प्राप्तांकों की होड़ में अपनी ऊर्जा को खपाना उसकी मजबूरी बन चुका है। जबकि कौशल विकास आज की दौर की आवश्यकता है।

रचनात्मक कार्यों के लिए संसाधनों एवं अभिप्रेरणा की आवश्यकता

श्रीमती रमाकान्ति साहू
(प्राध्यापक)
आई.ए.एस. ई बिलासपुर (छ.ग.)

मानव विकास का इतिहास संसाधनों की आवश्यकता एवं रचनात्मकता (सृजनशीलता) का इतिहास है। "आवश्यकता आविष्कार की जननी है" उसकी पूर्ति पुनः हमारी आवश्यकता एवं गुणवत्ता में वृद्धि का कारण है। आवश्यकता एवं सृजनशीलता साथ–साथ चलने वाली सतत् प्रक्रिया है जिनमें चोली दामन सा साथ है। हमारे पूर्वजो को सबसे पहले भोजन की आवश्यकता हुई जिसे वे कच्चा मांस एवं फल खाकर पूरा करते थे। समय परिस्थितियाँ, मांग एवं पूर्ति सृजनशीलता के स्त्रोत है जिसे अनेक संसाधनों की सहायता से हम पूरा करते हैं।

हमारी प्रथम आवश्यकता भोजन, वस्त्र एवं मकान है जिसे पूर्ण करने के अनेक स्त्रोत, साधन या माध्यम है। समय के विकास के साथ–साथ हमारी मांग एवं पूर्ति में गुणवत्ता का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। अभिप्रेरणा एक प्रकार की बाह्य या आंतिरक शक्ति है अथवा अवस्थाएँ हैं, जो क्रिया को नकारात्मक अथवा सकारात्मक रूप प्रदान करने में अहम भूमिका अदा करती है। प्रेरक (Motivate) उद्दीपन (Stimulus) से भिन्न होता है क्योंकि वह उत्तेजना के प्रकट होने से पहले से ही उपस्थित होता है। यदि आंतरिक अभिप्रेरणा न हो तो बाह्य उद्दीपन कितना भी होने पर अनुक्रिया उत्पन्न नहीं कर सकता जो सृजनशीलता के लिए अति आवश्यक है। अभिप्रेरणा एक प्रकार की शक्ति है जो मानव में अध्ययन तथा अन्य कार्यो को करने का जोश तथा रूचि उत्पन्न करती है। व्यक्ति जो भी कार्य करता है उसमें किसी न किसी प्रकार की अभिप्रेरणा की भूमिका निहित होती है।

आयु सृजनशीलता में बाधक नहीं है। धर्म, कला, विज्ञान एवं राजनीति के क्षेत्र में अनेक उपलब्धियाँ बड़ी आयु में मिली है। लेकिन वर्तमान समय में सर्वेक्षणों से यह पता चल रहा है कि इन क्षेत्रों में अनेक विलक्षण उपलब्धियाँ तीस वर्ष की आयु में ही मिल गई।

आज के विद्यार्थी कल भविष्य के राष्ट्र निर्माता होगे उन्हें ऐसे संवेदनशील प्रौढ़ों से प्रोत्साहन की आवश्यकता है जो रचनात्मकता की बुनियादी प्रक्रिया को समझता हो। इसके लिए धर्म की अहम् भूमिका है। एक शिक्षक अपने शिक्षण में कल्पना, सरलता, खोज वास्तविकता एवं नवाचार को शिक्षण विधि का अनिवार्य अंग मानकर संसाधनों का बेहतर उपयोग एवं अभिप्रेरणा की सहायता से अपने सृजनात्मक विचार को एक उद्देश्यपूर्ण उपलब्धि में बदल सकता है।

वर्तमान शिक्षा पद्धति के दोष

फलेन्द्र कुमार
विद्यार्थी
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर

शिक्षा जीवन जीने की कला है. किन्तु हम कला के नाम पर कुछ नहीं सीखते हैं. जो लोग पढ़ाई न सीख कर कोई हुनर सीख लेते हैं, वे हर मामले में काफी आगे देखे जाते हैं. आजकल व्यवसाय में जो लोग आगे हैं, वे इसी प्रकार की कला में पारंगत लोग हैं. आजकल जिस प्रकार की शिक्षा विद्यालयों में दी जा रही है, उसका जीवन से साथ कोई सरोकार नहीं दिखता है. इस कारण थोड़ी सी विपरीत परिस्थिति आने पर वह क्या करे, उसे सूझता नहीं है. जिस प्रकार तैरना सीखना हो, तो पानी में उतरना पड़ता है. पहले विद्यार्थी को पानी से जोड़ना होगा, फिर उसे तैरने की कला सिखानी होगी. किन्तु आजकल पानी से जोड़े बिना हवा में सारी बातें हो रही हैं. आज पढ़ने–लिखने का मतलब कुर्सी पर बैठ कर हुक्म चलाना हो गया है. पढ़े–लिखे लोगों को काम करने में लज्जा का अनुभव होता है. इसलिए समाज की हालत दिनोंदिन खराब होती जा रही है. बुद्धि और हाथ का उपयोग सम्यक रूप से नहीं हो पा रहा है। आज ज्ञान और कर्म के बीच मेलजोल खतम हो गया है। काम करने वाले के पास ज्ञान नही पहुँचता और ज्ञानी काम करना नहीं चाहता है. जो लोग पढ़ाई करते हैं, वे ठंड, गर्मी, तथा बरसात की मार नहीं झेल सकते हैं. जरा सा कुछ करना पड़ जाए तो बीमार हो जाते हैं या थक जाते हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि आज के शिक्षित लोग गूढ़ अनुभव को समझ नही पाते हैं. आज जगह जगह विद्यालय–महाविद्यालय खुलते जा रहे हैं, किन्तु वे प्राणहीन मूर्ति के समान हैं, वहॉ थोड़ा अक्षर ज्ञान जरूर मिल जाता है, बाकी ज्ञान के नाम पर ये सभी संस्थायें प्रमाण–पत्र बॉटने का काम कर रही हैं. पैसा दीजिये, और प्रणाम पत्र लीजिए. गॉवों की स्थिति तो और बदतर हो चुकी है, आजकल युवा पढ़–लिख कर अपनी खेती में मालिक के रूप में काम नहीं करना चाहता है, बल्कि वह नौकरी करना चाहता है, जहॉ वह हर दिन टूटता है जिस कारण वह अपने परिवार और पड़ोसी की भी शांति भंग करता है, जिस समाज में वह रहता है। इन महाविद्यालयों से प्रणाम–पत्र लेकर वह रोड पर चप्पलें चटकाता है और सारी व्यवस्था को दोष देता है, उसने इतना भी ज्ञान अर्जित नहीं किया कि उसे समझ में आ जाए कि नौकरी न पाने के पीछे व्यवस्था नहीं, अपितु उसकी अपनी कमियॉ हैं, जिसे वह दूर कर सकता है. किन्तु पता तब चलती हैं, जब अनुभव से कुछ ज्ञान प्राप्त कर पाता है, तब तब बहुत देर हो गई होती है।

इस प्रकार आज हमें अपनी शिक्षा पद्धति के दोषों को निकाल कर अपनी भारतीयता और वास्तविकता को समाहित करने की जरूरत है. जिससे आज जो समस्यायें युवा पीढ़ी के सामने आ रही है, वह न आयें, वह खूब कमाये, और सुख एवं शांति से अपनी जीवन यात्रा तय करें।

व्यक्ति के सृजनात्मक गुणों के विकास में अनौपचारिक शिक्षा में ग्रंथालय का महत्व

श्री सालिक राम
सहा.प्राध्यापक
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग.
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

सृजन मानव का मौलिक अधिकार है अर्थात नवीन कार्य करना, नए विचार लाना। मन से पूर्व की वस्तु, विचार, ज्ञान कार्य आदि को पुनः व्यवस्थित कर नया रुप प्रदान करना ही सृजनात्मकता कहलाती है। शिक्षा से सृजनात्मक गुणों का अनुभव किया जा सकता है। सृजनात्मक गुणों व सोच से देश के सांस्कृतिक एवं सामाजिक और आर्थिक विकास निर्भर करता है। किसी देश की प्रगति बहुत हद तक या तो नागरिक को दी जाने वाली शिक्षा पर निर्भर करती है औपचारिक या गौर औपचारिक संपादन के माध्यम से एक लोकतांत्रिक समाज को ऐसे सृजनात्मक नागरिकों की आवश्यकता होती है जो अपने पर्यावरण और भलाई के बारे में जानते हों देश की संस्कृति एवं सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक विरासत से परिचित हों। मानव सभ्यता के इतिहास में यह देखा जाता है कि सांस्कृतिक उपलब्धि एवं बौध्दिक गतिविधियों और साहित्यिक उपलब्धियों ने उन्हें सृजनात्मक व्यक्तित्व बनाए रखने के लिए संस्थान का निर्माण किया है, सार्वजनिक पुस्तकालय ऐसे संस्थानों मे से एक है। सृजनात्मक व्यक्तित्व के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक विकासशील देश की सृजनात्मक शिक्षा में भूमिका अर्थात् खुद की विचार धारा या कुछ अलग सोच जिससे विकास की निरंतर प्रकिया बनी रहे। इस संदर्भ में औपचारिक शिक्षाएँ महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों आदि का महत्व तो है ही परन्तु अनौपचारिक शिक्षा जा स्वयं के द्वारा जिज्ञासु मन से किया जाता है। यह इस स्वयं शिक्षा में रूचि रखने वाले लोगों के लिए विकाशील देशों के द्वारा मुक्त शिक्षा के लिए मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना भी की जा रही है जो एक सश्जनात्मक व्यक्ति के विकास के लिए सहायक होते हैं। वास्तव मे एक वास्तविक शिक्षा उस बिंदु पर शुरु होती है जहां औपचारिक शिक्षा समाप्त होता है। स्व शिक्षा की प्रकिया जीवन भर चलने वाली प्रकिया है और इसके लिए किसी वर्ग की आवश्यकता नहीं है। कमरे मे उपस्थिति एक सार्वजनिक पुस्तकालय निसंदेह इसके लिए सबसे उपयुक्त संस्थान है। किसी व्यक्ति के उदेश्य के लिए यह इसलिए आवश्यक नही है कि वह किसी पर निर्भर हो कर अपना विकास रोके जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा शिक्षा भी है। इसके लिए अनौपचारिक शिक्षा हेतु सार्वजनिक पुस्तकालय प्रमुख है जो जीवन भर शिक्षार्थियों के लिए हर समुदाय आधारित शिक्षा के लिए पहुँच बिंदु है। जो हर व्यक्ति को सृजनात्मक बनाने हेतु हर प्रकार कि शिक्षा प्रदान करने मे सहायक होता है।

अनौपचारिक शिक्षा अनुभव आधारित शिक्षा है जहाँ आप कुछ करके सीखते हैं या स्कूल के अलावा किसी अन्य स्थान पर सीखते हैं। अपने जूते को बांधना सीखना एक स्कूल शिक्षा मे नहीं पढ़ाया जाता है। लेकिन आमतौर पर आपके माता–पिता या साथियों के द्वारा आप जरूर सीख जाते है। सृजनात्मक का अर्थ व्यक्ति खुद से कुछ सृजनकर समाज के विकास हेतु अपना योगदान दे सकें।

स्कूली बच्चों में सृजनात्मकता बनाम व्यावहारिकता का प्रभाव एवं विवेचना

अम्बिका बसंत
एम.एड. छात्रा
गुरु घासीदासविश्वविद्यालय, बिलासपुर

विद्यालयीन जीवन में प्रत्येक छात्र–छात्राओं के मनः मस्तिष्क में नई–नई विचारों का सृजन होता है। यह सृजनशीलता क्रमशः माँ–बाप (परिवार), विद्यालय, दोस्तों, टी.वी. एवं समाज के मध्य अनुभव से आती है। यही वह अभिन्न हिस्सा है जहाँ से प्रत्येक मानव को गुजरना पड़ता है, लेकिन यह भी सत्य है कि बहुत से बच्चों को माँ–बाप, विद्यालय और टी.वी. बचपन से नसीब नहीं होता है। ऐसे बच्चे ही अनाथ जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूर होते हैं, और अपने आपको जीवित रखने कुछ नकारात्मक सृजन करने लग जाते हैं। परिणामस्वरूप, हमें बाल अपराध के रूप में दिखाई पड़ता है। यह समाज की दूसरा और कटु पहलू है। बच्चों में सृजनात्मकता के गुण के लिए व्यावहारिकता बहुत जरुरी है और व्यवहार ही तय करता है, कि आप बच्चों में कैसा सृजनात्मक गुण का विकास चाहते हैं। निश्चित ही यह सृजनात्मकता बनाम व्यावहारिकता एक दूसरे के पूरक के समान हैं जिस पर विद्यालयीन, पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण का काफी प्रभाव है। मानव एक सामाजिक प्राणी है, जिसके कारण वह अपने सभी क्रियाकलाप, ज्ञान–विज्ञान, खेल–कूद, गीत–संगीत, तीज–त्यौहार, प्रेम, क्षमा, त्याग आदि का सृजन करता है। और अपने नए ज्ञान और तर्क से नित–नये परिवर्तन लाता है। यह लेख विभिन्न द्वितीयक स्रोतों के अध्ययन एवं विश्लेषण से आवश्यक तथ्यों के मदद से पूर्ण किया जायेगा।

सार शब्द : सृजनात्मकता, व्यावहारिकता, विद्यालयीन, बच्चे, समाज

Education of Children with Hearing Impairment

Dinesh Bhaskar
B.Ed. Special Education (H.I.)
Department of Education
Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur, C.G.

Children with hearing impairments are educated in a variety of educational placements. To support their educational progress and ensure that appropriate provision is in place there are a number of key professional roles including special educational needs coordinators, teachers for children with hearing impairment and educational audiologists. There is also a variety of technology available to facilitate learning for children with hearing impairments.

Keywords - Audiology; British Sign Language; deafness; education; hearing impairment

"SCHOOL ENVIRONMENT AND CREATIVITY"

Smt. Urwashi Mishra
Assistant professor
D.P.Vipra college of education

A good classroom environment always has some elements of creativity which makes the lessons more interesting and interactive.The **right mix of creativity** along with curriculum helps students to be innovative and also encourages them to learn new things. Students can grow up as good communicators in addition to improving their emotional and social skills. **Creative classrooms** can really transform the way students acquire education and how they apply it in their real life. In fact, creative expression plays a key role in a student's emotional development.

Enhances thinking capability, creativity, can stimulate imaginative thinking capability in school students. That is why teachers promote activities in school such as open-ended questions,creative team building activities, brainstorming sessions and debates; amidst busy curriculum schedules in school environment. Some teachers tactfully use these techniques to teach tough lessons to make children learn with fun and ease. Activities such as puppet shows will keep the students feel interested in the learning sessions and the flow of images in their mind gives them the pleasure of creativity. The open-ended questions will open them a world of imaginative thinking and they can come up with creative responses organised at school.

"EFFECT OF SCHOOL AND HOME ENVIRONMENT ON CREATIVITY OF STUDENTS"

K.K. Kujur
Research scholar

Rajshree kumbhaj
Research scholar

Pt.sundarlal sharma(open) university Chhattisgrah, Bilaspur

A school's environment is the thread that connects the multitude of activities on a campus. In many respects this thread is almost invisible, yet everyone experiences its influence. A school's physical environment includes the school building and the surrounding environment such as noise,temperature,and lighting as well as physical, biological, or chemical agents.The psycho-social school environment encompasses the attitudes, feelings, and values of students and staff. Physical and psychological safety, positive interpersonal relationships, recognition of the needs and success of the individual, and support for learning are all part of the psychosocial environment.Other factors that can affect a school's environment include:the economy;social,cultural,and religious influences; geography; socioeconomic status of students' families and legal, political, and social institutions.

Home environment refers to all sorts of moral and ethical values and emotional, social and intellectual climate set up by the family members to contribute to the wholesome development of an individual. Family with its physical, intellectual and emotional aspects shapes a child's life in his journey towards self-fulfilment. Individual differences owe their origin mostly to a number of variables created by home, which may hinder or help the progressive growth of the child.

बालकों के सृजनात्मक विकास में शिक्षकों की भूमिका

श्रीमती संगीता सक्सेना
सहा. प्राध्यापक

श्रीमती रसिका लोणकर
सहा. प्राध्यापक

डी.पी.विप्र शिक्षा महाविद्यालय, बिरकोना, बिलासपुर (छ.ग.)

सृजनात्मकता एक ऐसा विचार है जिसके माध्यम से बालकों में निहित मौलिक संभावनाओं को विकसित किया जाता है। जिसके लिए मूलतः तीन अवधारणाएँ प्रचलित हैं –

(1) सृजनात्मक शिक्षा (2) सृजनात्मक मूल्य एवं (3) सृजनात्मक विचार

ये सभी अवधारणाऐं सृजनात्मकता के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डालती है। सच यह है कि सृजनात्मकता जीवन का विकासात्मक पक्ष है, इसके विकास में दंड एवं पुरस्कार का विशेष महत्व होता है। यह देखा गया है कि शिक्षकों द्वारा छात्रों को पुरस्कार दिया जाता है, वे सृजनात्मकता में अधिक सहयोग देते है और उनमें सृजनात्मक शक्तियों और क्षमताओं का विकास होता है, जो बालक तथा समाज दोनो के हित में है। अतः इस गुण का विकास किया जाना आवश्यक है।

शिक्षक को इस बात से परिचित होना चाहिए की सृजनशील बालक स्वतंत्र चिंतन एवं स्वतंत्र निर्णय वाले होते हैं। अतः बालक के सृजनात्मकता की पहचान करना एवं उसे सही दिशा प्रदान करना शिक्षक का कार्य है। शिक्षक को चाहिए की बालकों में सृजनात्मकता का विकास करने के लिए विद्यालय में उचित वातावरण तैयार करें एवं उपाय ढूँढे। इसके लिए शिक्षक सर्वप्रथम

- समस्या के स्तरों की पहचान करे।
- तत्थों का अधिगम (समस्या को हल करने में कौन–कौन से तत्थों को सिखाया जाए)
- मौलिकता (तत्थों को आधार पर मौलिकता से परिचय कराए)
- मूल्यांकन (स्वमूल्यांकन का विकास)
- पाठ्य सहगामी क्रियाओं का विकास करें।

यहाँ पर शिक्षक की भूमिका ऐसी होनी चाहिए कि वह विद्यार्थी को उसकी सश्जनात्मकता की प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति हेतु उपयुक्त माध्यम ढूँढने में समुचित मार्गदर्शन प्रदान करें।

School Environment and Creativity Development

Dr. Vibha Mishra
Principal

Mr. Annu Singh Yadav
Assitant Professor

D.P. Vipra college of Education, Birkona, Bilaspur (C.G.)

School is one of the institutions for students' creativity development. School only needs an extra effort that will enable it to build a conscious and creative generation that will keep peace with the rapid change and recent development in this era of globalization, economic transformation and information communication technology age as new discoveries emerge every day, hence, the role of school is needed in guiding students towards creativity to take advantage of modern development.

Research has shown that creativity leads to intellectual development and brain growth, when creativity is nurtured well by concerned institutions. School and other social institutions play an active and influential role in developing students' creativity through their available resources and their specific planned goals.

A creative school environment is one that exposes learners psychologically and socially to facilitate creativity in which learners are motivated to discover things by themselves, it promotes all necessary ways to creativity, to help students develop the creative personality traits. Based on this, the purpose of this current paper is to identify the role of the school in creating an environment that will develop creativity among students through the review of literature.

शिक्षा में मातृभाषा का महत्व

अखिलेश कुमार तिवारी
हिंदी अधिकारी
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।।

महान साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चंद्र की उक्त कविता से स्पष्ट है कि किसी राष्ट्र के विकास में मातृभाषा का कितना महत्व है। सामाजिक चेतना का विकास मातृभाषा के मातृभाषा के माध्यम से ही होता है। मातृभाषा ही हमें समाज की बुनियाद से जोड़ती है। मातृभाषा के बिना किसी भी क्षेत्र में विकास नहीं किया जा सकता। जन्म लेने के बाद मनुष्य जो पहली भाषा सीखता है, उसे उसकी मातृभाषा कहते हैं। मातृभाषा किसी व्यक्ति की सामाजिक एवं भाषाई पहचान होनी है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का मानना था कि भारत में 90 प्रतिशत व्यक्ति चौदह वर्ष की आयु तक ही पढ़ते हैं, अतः मातृभाषा में ही अधिक से अधिक ज्ञान दिया जाना चाहिए। उनका मानना था कि मातृभाषा का स्थान कोई दूसरी भाषा नहीं ले सकती।

व्यक्ति के सीखने और ज्ञानार्जन के लिए सबसे अच्छा माध्यम मातृभाषा है। मातृभाषा में जो अपनापन व आत्मीयता होती है, वह किसी दूसरी भाषा में नहीं हो सकती। विश्व के सभी विकसित राज्यों में उनकी मातृभाषा ही शिक्षा का माध्यम है। फिर चाहे वह जापान, फ्रांस, जर्मनी हो या अमेरिका। किसी भी शिक्षा प्रणाली में मातृभाषा का उतना ही महत्व है, जितना एक शिशु के पालन पोषण में मां का। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होने से शब्दों का सही व सटीक ज्ञान होता है तथा शैक्षणिक क्षमता व शिक्षा ग्रहण करने की दक्षता में वृद्धि होती है।

Faults of Present Examination System and Suggestion from Creative view

Mr. Senapati Nayak
Assistant. Professor

Smt. Rameshwari Tiwari
Assistant. Professor

D.P. Vipra College of Education, Birkona, Bilaspur (C.G.)

Examinations, like a Surgeon's Knife, are necessary evil. Nobody can do without the examination. In fact, life itself is a continuous examination. We are taking test at all stages of our life. The prevailing system of examination is every where an object of criticism. It suffers from a large number of draw backs and requires complete overhauling.

The System of examinations is not the real test of the students ability. It does not ensure accurate result in judging the real worth of an examinee. It is the rather a game of chance. The standards of marking varies from examiner to examiner and even with the same examiner at different times. Again the ability and worth of a student cannot be judged through a three hour test.

We have seen and experienced that our present examination system have many faults/ demerits the faults of our present examination system which given below.

- Examination have become a terror for the examinees.
- Every students feel nervous as the examination draws near.
- The system of examination is full of uncertainty.
- It is most unnatural and unscientific, sometimes a dull student get with flying color and the brilliant student may cut a sorry figure.
- This system encourages cramming, it is a test of memory only.
- Our colleges have became laboratories of cram work.
- The system is simply to stuff the brain with bookish knowledge.
- The present system does not make him fit for taking up the practical duties of life.
- The examinees burn mid-night oil to get good marks. this overwork tell upon their health.
- The System discourages general knowledge. It limits a student's range of study. They study only the part of their syllabus. There fore he/she knows nothing about the world around him/her.

- The System of education suffers form glaring defects and it requires speedy reforms.

➢ **Suggestion on Creative View**

- Old system of marking is being replaced by a grading system. This makes the marking of the answer books mere objective
- Discourages guess work and cramming cover the entire syllabus during framed Questions papers.
- Seasonal work is assessed regularly and the marks obtained during the various Term during the year are counted towards the making up the final grade.
- Trying to applying the concepts of open book examination being accepted and put into practice in Some of the universities in the country.
- Organizing many training for exam pattern.
- Applying practical mode mostly in education System.
- Promote continues comprehensive evaluations.
- Question paper's should be organized and maintain reflective thinking. etc.

विद्यालय वातावरण एवं सृजनात्मकता

कालीचरण यादव
सहायक प्राध्यापक

मीनाक्षी महंत
सहायक प्राध्यापक

पं. मदन मोहन मालवीय, शिक्षा महाविद्यालय लावर, बिलासपुर (छ.ग.)

विद्यालय का वातावरण ऐसा कारक है जो बच्चों को प्रभावित करता है, और उनके व्यक्तित्व में परिवर्तन लाता है। बच्चों के भविष्य की नींव घर या परिवार में रखी जाती है। विद्यालय में शिक्षक द्वारा उसे अनुकूल बनाकर उस पर विकास का भवन निर्मित किया जाता है। शिक्षा का उद्देश्य है कि विद्यालय में पढ़ने वाले सभी बच्चों का नैतिक स्तर ऊंचा हो, सभी बच्चें संवेगात्मक रूप से स्थिर बने, वे शारीरिक रूप से स्वस्थ और सामाजिक रूप से व्यावहारिक हो ताकि वे परिवार, विद्यालय और समाज में अपने को समायोजित कर सके। बच्चों में उक्त योग्यताओं और क्षमताओं के विकास के लिए यह आवश्यक है कि विद्यालय का वातावरण अनुकूल स्थितियों से युक्त हो। विद्यालय के वातावरण को संवारने में शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। विद्यालय का अच्छा वातावरण बच्चों को विकास की उचित दिशा में उन्मुख करता है। विद्यालय में शिक्षक का बच्चों के प्रति व्यवहार, स्वयं का व्यक्तित्व एवं चरित्र ऐसी कई बाते है जो बच्चों के व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करती है। विद्यालय में भौतिक वातावरण के निर्माण के लिए आवश्यक है कि विद्यालय का भवन स्वच्छ हो।

किसी व्यक्ति की अनोखी किया की अभिव्यक्ति को ही सामन्यतः सृजनात्मकता कहते है। सृजनात्मकता नवीनता को जन्म देती है और नवीनता प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी तरफ आकर्षित करती है। जरूरत है तो सिर्फ बच्चों को अवसर उपलब्ध कराने की। प्रत्येक शिक्षक कुशल अध्यापनकला से नवीनता को बढ़ावा दे सकते हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में यह स्वीकार किया गया है कि कला के विविध माध्यम और स्वरूप बच्चों को खेल–खेल में तथा विषयबद्ध रूप में विकसित होने में मदद करते है। उन्हें अभिव्यक्ति के कई रास्ते सिखाते है। संगीत, नृत्य और नाटक विद्यार्थियों के आत्मबोध उनके ज्ञानात्मक और सामाजिक विकास में सहायक होते है।

वर्तमान परीक्षा पद्धति के दोष तथा सृजनात्मक दृष्टि से सुझाव

डॉ. अजरा कुरैशी
शास. महामाया महाविद्यालय, रतनपुर

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अनेक दोष हैं। शिक्षा के नए प्रयोगों के इतने संकल्प विकल्पो के पश्चात् भी हम जहाँ के तहाँ खड़े हैं ।

शिक्षा के साधारणतः दो उद्देश्य माने गए हैं : प्रथम समाज को विद्यमान आर्थिक व्यवस्था में आजीविका कमाने हेतु व्यक्तियों को प्रशिक्षण देना, निपुणता में वृद्धि करना एवं प्रविधियों को सिखाना। द्वितीय, समाज के युवा वर्ग का सामाजिकरण करना, उन्हें ऐसा ज्ञान, मूल्य, प्रवृत्तियाँ तथा व्यवहार के आदर्श मापदण्ड प्रदान करना, जो उन्हें वयस्क होनें पर विभिन्न सामाजिक संबंधो के बीच अपनी भूमिका निभाने के योग्य बना सके।

वास्तविकता यह है कि वर्तमान शिक्षा पद्धति इन उद्देश्यों की पूर्ति करने में असफल रही है। महाविद्यालयों में सेमेस्टर प्रणाली वर्तमान में प्रचलित वार्षिक प्रणाली की कमियों को समाप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम प्रतीत होता है। आधुनिक युग वैश्वीकरण का युग है, इसलिए उच्च शिक्षा में गुणवत्ता सुधार के लिए परीक्षा प्रणाली में परिवर्तन करना आवश्यक है, परीक्षा प्रणाली छात्रों को किताबी ज्ञान के साथ–साथ रोजगार के नये अवसर तलाशने का मौका भी उपलब्ध कराने में सक्षम हो एवं उनमें आत्मविश्वास का विकास हो।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली के दोष तथा सृजनात्मक दृष्टि से सुझाव

डॉ. आई.पी. दिनकर
सहा.प्राध्या. समाजशास्त्र

डॉ. विजय लक्ष्मी देवांगन
सहा.प्राध्या. राजनीति विज्ञान

शास. महाविद्यालय साजा, जिला– बेमेतरा

शिक्षा के बिना मनुष्य पशुवत ही है क्योंकि शिक्षा ही वह माध्यम है जो मानव को सभ्य बनाती है। प्राचीनकाल में शिक्षा का स्थान नगरों के शोरगुल से दूर वनांचलो में गुरूकुल में होता था जिसका संचालन सिद्ध ज्ञानी–मुनि किया करते थे। कालांतर में भारत लंबे समय तक परतंत्र रहा जिसमें मुगल काल में केवल सामंती ही शिक्षा ग्रहण कर सकते थे, जबकि स्त्री शिक्षा तो लगभग खत्म ही हो गई इसके पश्चात् ब्रिटिश

काल में जिस शिक्षा पद्धति का प्रचार प्रसार लार्ड मैकाले ने किया आज की वर्तमान शिक्षा पद्धति उसी का प्रतिनिधित्व करती हुई नजर आती है। जहॉ शिक्षा का आधार बालक के संपूर्ण व्यक्तित्व को निखारने के साथ उसे आत्मिक, मानसिक व नैतिक रूप से शिक्षित करने के साथ साथ रोजगारोन्मुख बनाना है वहीं वर्तमान शिक्षा पद्ति इससे कोसों दूर खड़ी नजर आती है जिसमें केवल नंबरो को बढ़ाने की होड़ लगी रहती है। विषयों के ज्ञान को आत्मसात करने के बजाय केवल रट्टा मारना ही रह गया है। दूषित परीक्षा पद्धति, विषय सामाग्री की दुर्बलता, और केवल अंको के पीछे भागने की होड़ ने आज की शिक्षा प्रणाली को विकलांग बना दिया है जिसके कारण आज समाज को या तो घिसे पिटे क्लर्क मिल रहे हैं या फिर पढ़े लिखे बेरोजगार जो अपना पेट भरने और बेहतर जीवन जीने के लिए किसी भी अपराध को अंजाम देने से नहीं चूक रहे हैं। ऐसे शिक्षा प्रणाली में विभिन्न सुधारों की अनिवार्य आवश्यकता है, जैसे शिक्षा का माध्यम केवल बंद कमरों मे ना होकर व्यवसाय उन्नमुख होना चाहिए। शिक्षा केवल तकनीकी ज्ञान का नही अपितु नैतिकता का पाठ पढ़ाना भी उतना ही आवश्यक होना चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी पाना नही अपितु समाज कल्याण करते हुए स्वरोजगार स्थापित करने का होना चाहिए।

A Multimodal Approach in the Classroom for Creative Learning and teaching

Pawan Singh Rajput
M.Ed. Trainee

Shweta Thakur
B.Ed. Student

D.P. Vipra College of Education, Birkona, Bilaspur (C.G.)

A multimodal approach in the classroom can be a source of creativity for bath teachers and students. It draws upon available visual, audio and kinesthetic modes and does not necessarily rely on technology. This paper will briefly define what modes are and outline the origins of multimodal studies in the New London Group (1996). Through a multimodal lesson using video, we can identify modes and how these correlate not only to contemporary society but to specific cognitive processes. This combination allows for creativity and forcibility in teacher-student interaction and can enhance the learning environment.

This Paper considers the work of "Kress and Jewitt" and their research in multimodal studies, and applies these concepts to higher Education and the undergraduate experience in second language learning. It focuses on the combination of text, audio and image as individual modes and how these can be creativety combined to produce meaning, encourage interaction and learning in the classroom. Engaging students in course content requires strategies of communication that a) focus and maintain attention, and b) work past the simple cognitive styles of information recognition to active duper forms of memory creation. Multimodal approaches tend to do this naturally and as the research result demonstrate, the students responded favorably to multimodal input. The majority of students preferred visual stimulus or a combination of visual and text stimuli for acquiring new lexis and for enhancing oral production.

शिक्षा की वर्तमान स्थिति

डॉ.अमिता
सहायक प्राध्यापक

डॉ. संतोष कुमार बघेल

गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

शिक्षा मनुष्य के जीवन का वह अंश है जिसके बिना मनुष्य पशु के समान माना जाता है। शिक्षा मनुष्य के जीवन का असीम आधार है जो अंधेरे में सदैव रोशनी की तरह हमें प्रज्वहलित करता है। इसीलिए विभिन्न विद्वानों ने शिक्षा को अपने–अपने तरह से व्याख्यायित किया है। महात्मा फूले ने कहा था कि "विद्या बिना मति नहीं, मति बिना नीति नहीं, नीति बिना गति नहीं।" इसी प्रकार शिक्षा के संदर्भ में बाबा साहब का कहना था कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्रांति का मूलाधार शिक्षा है। शिक्षा के परिणाम स्वरूप, स्वालंबन और आत्मोद्धार से क्रमश बंधुत्वक समानता और स्वतंत्रता के मूल्य प्राप्ति होना चाहिए। शिक्षा यानी परिवर्तन यह उनके शैक्षणिक विचारों का मुख्य सूत्र रहा है। 13 जून 1953 को रावकी कैम्प, मुंबई में उन्होंने कहा था कि "हम लोग शिक्षित हुये यानी सब कुछ हो गया ऐसी बात नहीं है। शिक्षा के साथ– साथ मनुष्य का शील भी सुधरना चाहिए। उसके बिना शिक्षा का मूल्य शून्य है। ज्ञान तलवार की भांति है। यदि किसी आदमी के पास तलवार है तो उसका सदुपयोग अथवा दुरूपयोग करना उसके सदाचार पर निर्भर करेगा । वह उससे किसी की जान भी लेगा या किसी की जान बचा भी लेगा। ज्ञान भी ऐसा ही हैं।"

कुछ समय से एनडीटीवी पर रवीश कुमार द्वारा भारत के बदहाल शिक्षा व्यवस्था को उजागर करने के लिए यूनिवर्सिटिज सीरीज चलायी जा रही है, जिसमें वास्तविक स्तर पर महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों की शिक्षा किस स्तर पर है उस ओर ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की जा रही है। ज्ञात हो कि 1850 तक भारत में गुरूकुल प्रथा प्रचलित थी, परंतु मैकाले द्वारा अंग्रेजी शिक्षा के संक्रमण के कारण भारत की प्राचीन व्यवस्था का अंत हुआ और भारत में गुरूकुल के स्थान पर कान्वेंट और पब्लिक स्कूल खोले गए। शिक्षा के संदर्भ में डॉ. अल्टेकर का कहना है कि वैदिक युग से लेकर अब तक भारतवासियों के लिए शिक्षा का अभिप्राय यह रहा है कि शिक्षा प्रकाश का स्त्रोत है तथा जीवन के विभिन्न कार्यों में हमारा मार्ग आलोकित करती है। जबकि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था इससे इतर है जिसे 'चिराग तले अंधेरा' कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। आज शिक्षा का पूरा उद्देश्य चंद कागज के टुकड़ों तक ही सीमित हो गया है, जहां नौकरी के लिए शिक्षा के सभी उद्देश्य को दरकिनार कर दिया गया है। असमानता, भेदभाव, बाजारवाद तो भारतीय शिक्षा का मुख्य अंग बन गया है।

सृजनात्मकता का विकास व तनाव मुक्त शिक्षा

राजन कुमार
एम.एड. शिक्षा विभाग
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

मनुष्य के विकास में शिक्षा की काफी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वर्तमान समय में हो रहे बदलाव के साथ–साथ शिक्षण पद्धति तथा शिक्षा ग्रहण करने की प्रक्रिया में काफी तीव्र गति से बदलाव हो रहा है। आधुनिक व तकनीकि शिक्षा की मंहगाई व व्यवसायीकरण होने के कारण शिक्षण पद्धति काफी कमजोर होती जा

रही है, जिसके परिणाम स्वरूप विद्यार्थी तथा उसके परिजनों के जीवन में तनाव बढ़ता जा रहा है। सभी शिक्षण संस्थान बालकों के सर्वांगीण विकास तथा गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के द्वारा रोजगारमूलक बनाने के नाम पर महंगी रकम वसूल रहे हैं। वहीं दूसरी ओर रकम प्रबंधन के तनाव से छात्रों के सश्जन क्षमता में कमी हो रहा है। इसके साथ–साथ परीक्षा पद्धति में नित्य प्रतिदिन बदलाव किया जा रहा है जिससे कि विद्यार्थी के परिणाम में कमी हो रही है।

इन सभी का मुख्य कारण शिक्षा का व्यवसायीकरण व दोषयुक्त शिक्षा प्रणाली को जाता है। सृजनात्मकता के विकास में शिक्षक व शिक्षण पद्धति की अहम भूमिका होता है। शिक्षक अपने कर्तव्य पालन से काफी दूर होते जा रहे हैं। बालकों में सृजनात्मकता का विकास किए बिना अच्छी व मूलपरख शिक्षा प्रदान कराना संभव नहीं है। इसके लिए छात्रों के साथ कुशल व्यवहार अच्छे शिक्षण वातारण, स्वास्थ्य शिक्षा व अध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा को प्रदान कराना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

वर्तमान शिक्षा पद्धति को शिक्षक केन्द्रित के बजाए छात्र केन्द्रित व सैद्धांतिक शिक्षा के बजाए मुझे प्रयोगिक शिक्षा व व्यवसाय एवं कौशल शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। विद्यार्थी को उसके समझ क्षमता के विकास हेतु उसे अधिक से अधिक प्रत्येक कार्यों में अवसर मिलें एवं विचारों को रखने की स्वतंत्रता, निर्णय लेने की क्षमता तथा कुशल नेतृत्व कार्य की क्षमता का विकास किया जाए। विद्यार्थी को तनावमुक्त शिक्षा व जीवन यापन करने हेतु उसमें योग व आसन – प्राणायाम अभ्यास कराया जाए जिससे उसके बौद्धिक, मानसिक व शारीरिक सर्वांगिण विकास में सहयोग मिलें। अपने आगामी जीवन में छात्रों समस्या के समाधान व कुशल प्रबंधन कार्य व नवीन विचारधारा लाने के योग्य बनाया जाए तभी छात्र तनावमुक्त होकर शिक्षा ग्रहण करेंगे और अपने लक्ष्य को प्राप्त कर जीवन सफल बना सकते हैं।

Indian Education System: Opportunity or Hindrance in Development of Creativity among Adivasis

Dr. Ajay Samir Kujur
Assistant Professor
Department of Education
Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur

We are living in a dynamic global world where scientific innovations, philosophical revelations, revolutionary outbursts and most things of value are manifestations of the creativity of individuals or groups. Creativity has the power to incredibly alter the ways of the individual, society, country and the world for the better. In fact prosperity of an individual, a community or even a nation depends critically on the knowledge and creativity skills. Creativity is the heart of successful development of all aspects: personality, social, economical, cultural etc.

Adivasis are sections of Indian society who are most underdeveloped due to reasons like isolation, neglect, discrimination etc. Now that their integration with rest of Indian society has become the essential task before the nation development of creativity among them is

must. Thus, education provided to them should aim at generating and nurturing creativity. Creativity should form an essential aspect of teaching and learning in schools meant for them. In this paper an attempt has been made to assess the possibility to foster creativity at the educational system of Adivasis by examining environments, practices, and organizational structures. The observation reveals, instead of fostering this highly valuable and exceptionally rare trait among Adivasi, our education system obstinately and ruthlessly quells it.

Present education system and creativity :

Mrs. Poornima Tiwari Kajal Bhalla

Shri shankaracharya Mahavidhyalaya

An article in WEF (World Economic Forum) comment on its 'Future of Jobs' report stated that 65% of all students who are entering primary school now will have jobs that don't exist today. IBM's 2010 'Global CEO Study' that interviewed 1500 global CEOs said that Creativity is the most important factor for future success. According to the 2012 'State of Creativity' report by Adobe, 80% respondents across five global large economies (USA, UK, France, Japan, Germany) said that creativity is key to driving economic growth. In the same report, only 25% people said that they are living upto their creative potential where as 59% said that Creativity is being influenced by present education system. With multiple global reports suggesting that creativity is one of the most needed abilities for success today and over the next couple of decades, being creative becomes extremely critical for school students to succeed who will start working in 5 – 10 years from now. It also becomes critical that we take a look at the condition of creativity and creative thinking from a holistic national perspective for India.

The four key stakeholders who are crucial pillars of education and work – **students, educators, corporates and parents** – have been part of the report. Those surveyed for this report include corporates working as CXOs and senior HR personnel in India, educators comprising of principals and school teachers, parents of kids of ages 10 – 15 and school students of classes 5 – 10. Corporates were primarily surveyed on the importance of creative thinking in their present and future recruitment and training processes. Corporates, educators and parents were asked about their views on the current focus on creative thinking in the education and school systems in India, and what more needs to be done to foster creativity among school students. Students were surveyed on what they understand about creative thinking, its importance with reference to their future success.

सूचना प्रौद्योगिकी से शिक्षा में गुणवत्ता की भूमिका का विश्लेषण एवं महत्व

अरविंद तिवारी
रिसर्च स्कालर

डॉ.वैभव शर्मा
सह प्राध्यापक

डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर

वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी ने मानव जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है, जिसका सकारात्मक प्रभाव अब हर क्षेत्र में परिलक्षित होने लगा है। सूचना प्रौद्योगिकी ने शिक्षा, चिकित्सा, तकनीकी आदि क्षेत्रों में अपनी गहरी छाप छोड़ी है। शिक्षा के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग ने शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रिया को प्रभावी सुलभ एवं सरल बना दिया है। सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग कर विद्यालय, महाविद्यालय में प्रवेश की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी एवं पारदर्शी ढंग से संपन्न कराया जा सकता है, जिसके प्रयोग से प्रवेश की प्रक्रिया को दूरस्थ ग्रामीण अंचल के विद्यार्थी के लिये भी सहज सुलभ कराया जा सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग कर न केवल शिक्षक बल्कि योग्य विद्यार्थी भी अपना व्याख्यान तैयार कर सकते है। इसमें ध्वनि, चित्र, चलचित्र आदि को समाहित कर व्याख्यान को और प्रभावी बनाया जा सकता है। एक योग्य एवं प्रसिद्व शिक्षक के व्याख्यान का लाभ न केवल उसके कक्षा के विद्यार्थी बल्कि देश के किसी भी कोने के विद्यार्थीयों द्वारा लिया जा सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग कर आंतरिक मूल्यांकन एवं बाह्य मूल्यांकन को भी सरल, सुलभ, प्रभावी एवं पारदर्शी बनाया जा सकता है। इस प्रकार के मूल्यांकन से विद्यार्थी को तनाव से भी मुक्त किया जा सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग से अब अभाषी कक्षा (वर्चुअल क्लास रूम), अभाषी प्रयोगशाला (वर्चुअल लैब) एवं अभाषी पुस्तकालय (वर्चुअल लाइब्रेरी) आदि की संकल्पना साकार होती है। शिक्षा व्यवस्था के मूल में शिक्षक होता है एवं शिक्षक के ज्ञान, व्यवहार, कौशल एवं सक्षमता आदि का विकास सतत् रूप से आवश्यक होता है। सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा हम अपने शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक कर्मचारियों का सहज, सतत् उन्मुखीकरण कर सकते है। सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग कर हम प्रभावपूर्ण सरल, सहज, सुलभ शिक्षा की संकल्पना को साकार कर सकते है।

Net Generation Students and Libraries

Rakesh Kumar Yadav
Department of Chemistry

Yamini Yadav
Department of Mathematics

Dr. C.V. Raman University, Kota, Bilaspur (C.G.)

Libraries and digital information resources can play a critical role in the education of today's students. Libraries license access to electronic journals, which provide key readings in many courses, and set up electronic reserve systems to facilitate easy use of materials. Libraries are an important resource for assignments that encourage students to go beyond the course syllabus. They provide access to the marketplace of ideas that is a hallmark of American higher

education. Since much of the learning in higher education institutions takes place outside the classroom, libraries can be one important venue for such learning. The library can play a critical role in learning directly related to courses, such as writing a paper, and processes related to lifelong learning, such as gathering information on political candidates in order to make informed choices in an upcoming election. Libraries provide collections, organized information, systems that promote access, and in-person and virtual assistance to encourage students to pursue their education beyond the classroom.

It is difficult to generalize, but this chapter will use some characteristics of the Net Gen student that have been described by a number of researchers. Given that this generation of college students has grown up with computers and video games, the students have become accustomed to multimedia environments: figuring things out for themselves without consulting manuals; working in groups; and multitasking. These qualities differ from those found in traditional library environments, which, by and large, are text-based, require learning the system from experts (librarians), were constructed for individual use, and assume that work progresses in a logical, linear fashion.

Key Words: Access to and Use of Information Resources, Locating Quality Digital Information, Incorporating Visual Cues, Library and Information Services, Fluency with Technology and Information Literacy, Delivering Service with Style.

वर्तमान शिक्षा पद्धति एवं तनाव प्रबंधन

डॉ. अभिषेक पाठक
सह–आचार्य प्रबंधन
डॉ. सी.वी.रमन् विश्वविद्यालय, कोटा बिलासपुर

डॉ. कल्पना अभिषेक पाठक
सहायक प्राध्यापक हिंदी
शासकीय महाविद्यालय कोतरी, जिला–मुंगेली

शिक्षा किसी समाज के विकास की आधारशिला होती है। शिक्षा कई मायनों में सुखद भविष्य का आधार होती है। पर अच्छी शिक्षा ही हमारे बच्चों को बेहतर भविष्य देगी, यह सोचकर वर्तमान समय में प्रत्येक माता–पिता अपने बच्चों की शिक्षा के लिए बहुत ही जागरूक हो गए हैं। कई बार हम अपनी इस सोच को बच्चों पर उसकी योग्यता, क्षमता और अभिरूचि को जाने बगैर थोप देते हैं, जो माता–पिता और बच्चों के लिए तनाव का कारण बनता है। हम आए दिन समाचार पत्रों में बच्चों द्वारा शिक्षा के दबाव के चलते आत्मघाती कदम उठाने की खबरे सुनते हैं। प्रतियोगिता के इस दौर में वही शैक्षणिक संस्थान सफल माना जाता है जहाँ के विद्यार्थी अधिक प्रतिशत लाते हों। ऐसी स्थिति में वर्तमान समय में शैक्षणिक संस्थानों का माहौल भी तनावपूर्ण हो गया है। ऐसे तनावपूर्ण माहौल में बच्चों का सर्वांगीण विकास असंभव है।

महात्मा गाँधी सच्ची शिक्षा उसे मानते थे जो बालक की आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक शक्तियों को विकसित करती है। आज की विषम परिस्थितियों को देखते हुए गांधी जी के विचारों को शिक्षा पद्धति में लागू करना आवश्यक प्रतीत हो रहा है। वर्तमान समय में मूल्यपरक शिक्षा लागू करके बच्चों में नैतिकता विकसित करनी होगी। शैक्षणिक संस्थानों का उद्देश्य होना चाहिए कि वे विद्यार्थियों को

संस्कारवान और योग्य बना सकें। तनाव को दूर करने के लिए ध्यान और योग को शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाना होगा। स्वस्थ मन के लिए शरीर का स्वस्थ होना आवश्यक है इसलिए शिक्षा के साथ–साथ व्यायाम और खेलकूद पर भी जोर देना चाहिए। नई पीढ़ी को प्रतियोगिता के इस दौर में अपनेपन और सहयोग की भावना भी सिखानी होगी। इन प्रयासों से हम आने वाली पीढ़ी को तनावमुक्त माहौल में सही शिक्षा दे पाएँगे।

बी.एड. छात्रा अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं में अभ्यास शिक्षण की अवधि में सृजनात्मक क्षमता का विकास

अमृता तिवारी
एरिसेन्ट बी.एड. कॉलेज
पटेलपाली ,रायगढ़ (छ.ग.)

सृजनात्मकता मुख्यतः नवीन रचना एवं उत्पादन की क्षमता है। बी.एड. छात्रा अध्यापिकाओं और छात्र अध्यापक अपने अभ्यास शिक्षण की अवधि में विभिन्न प्रकार के शिक्षण कौशलों का प्रयोग करते है जोकि उनमें सृजनात्मकता का विकास करते है। नवाचार की प्रकिया में भी सृजनात्मकता का महत्वपूर्ण योगदान है। अभ्यास शिक्षण की अवधि में प्रस्तावना कौशल द्वारा प्रश्न पूछ कर एवं श्याम पट्ट कौशल द्वारा चित्र बनाकर प्रशिक्षार्थियों की सृजनात्मकता का विकास होता है। इस प्रकार विभिन्न सृजनात्मक कियाओं के द्वारा प्रशिक्षार्थियों में सृजनात्मकता का विकास होते रहने की सतत् प्रकिया चलती रहती है।

वर्तमान परीक्षा पद्धति के दोष तथा सृजनात्मक दृष्टि से सुझाव

श्रीमति बर्नाली राय
विभागाध्यक्ष बी.एड विभाग
आदर्श महाविद्यालय दतरेंगा रायपुर

भारत में हर बच्चा शिक्षा ग्रहण करने में सक्षम नहीं है इसका सबसे बड़ा कारण है पुरानी और कमजोर परीक्षा प्रणाली है। पुरे सत्र में पढ़ने के बाद छात्र परीक्षा भवन भवन में परीक्षा देने के लिए जाते हैं जिसमें कुछ प्रश्नों के उत्तर लिखना है। सभी छात्र अपनी अपनी तरफ से सर्वश्रेष्ठ उत्तर देते है तथा तथा परिणामों का इंतजार करता है अक्सर ये देखा गया है कि जो छात्र पुरे वर्ष भर अपनी परीक्षा की तैयारी करते हैं वे परीक्षा के दिन डरावनी तथा उदासी का सीमना करते हैं। परिणाम आने के बाद सबसे अच्छे छात्र भी बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं। वर्तमान परीक्षा प्रणाली की जो स्थिति है उसमें बड़े बदलाव की आवश्यकता है। जिसमें सृजनात्मक दृष्टि से छात्र को प्रायोगिक परीक्षा करवानी चाहिए ताकि छात्र की सृजनात्मक योग्यता का परीक्षण किया जा सके। प्रोजेक्ट या असाइनमेंट हो सकता है, छात्रों का अच्छा प्रदर्शन हो सकता है, छात्रों को पसंदीदा विषयों का चयन करने देना एवं अनुचित दबाव से बचाना चाहिए।

केवल रटंत विद्या को सामने रखकर परीक्षा का आयोजन न करके उनके सालभर के कियाकलापों का भी आंकलन होना चाहिए। शिक्षा का यह कार्य है कि सृजनात्मकता की पहचान कर उसके विकास हेतु समुचित अवसर प्रदान किया जाय। उदाहरण स्वरूप किसी बालक की अभिव्यक्ति का माध्यम खेलकूद हो सकता है। जिमनास्टीक का अभ्यास नृत्यकला की आधारशिला बन सकता है। परीक्षा प्रणाली केवल सैद्धांतिक न होकर व्यवहारिक अधिक होना चाहिए।

The Application Of Innovative Knowledge In Academic Provide Opportunity To Develop Creativity With The Help Of Education

Amit Kumar
M.ED. (2017-19) Dept. of Education
GGV, Bilaspur, (C.G)

In today's global world new knowledge and thinking could be turned it into new product by maintaining and enhancing the competiveness. So at present, context education must be on application based which helps the learner creative in mind. It is only possible when institution gives the opportunity to the learners to perform independently with his own pace in academic activity. When learner expertise learning by doing; then the current stock of knowledge provides the fertile ground from which leaner develop creativity with the new knowledge. The generation of new knowledge involves fundamental, uncertain, it takes us beyond what we know. In this paper researcher point out that how the application of innovative knowledge in academics provides opportunity to develop creativity with the help of education. It is clear that practice must change, change implies innovation and innovation strengthens aims to smoothen flow of knowledge through the delivery of social goals. In academics when we use the application of innovative knowledge with the help of methods, techniques, tools and values which organise and use, acquire, create, devlop, share, transfer and apply to provide a return to the intellectual.
Keywords- competiveness, independently, expertise, social goals.

Suggestion for defects and removal of present examination system

Name Annu Kumari
Class-M.Ed4th sem
Guru Ghasidas Vishwavidyalaya Bilaspur (C.G)

The destiny of any person, society or country depends on its education system. All paths of development and progress pass through education. What is right, what is wrong is that knowledge gets a double degree of education. Education itself creates a discretionoly approach. Knowledge makes a person power to society and power to the nation. Thus, the role of education is important as an important aspect of human social and cultural life. The education system depends on our thinking. In today's system of examination, assessment of the evaluation of the person's abilities is very limited, which is insufficient, due to which the overall depiction of

the yogicness or progress of a person can not be achieved in order to fulfill the objectives of education. One major problem with the Indian education system is that the student is working hard for one year and its results are given in two or three hours by an examination assessment.The present method of examination can only be done by rattanology. The certificate of this type of examination is given more importance, due to which Co-scholastic activities are going away.. In India today, education has become a trade off, no creativity, no activity, no children encouraged or rewarded, only by taking a test card and finally giving a result card, they are fulfilling their duties of Indian education system There is lack of practicality and creativity. Education is not just for learning the curriculum textbooks. It is beyond this but the system of points creates competitiveness and prevents students from doing other things like sports, musical instruments, so the importance of the numerical system should be removed. Most students are, who are especially top class, they are very good at expressing their views in writing, but they rarely speak in public life or raise voice against anything They lack confidence, so take more emphasis on oral examinations.

SCHOOL ENVIRONMENT AND CREATIVITY

MANASH KUMAR
M.Ed. 2nd Sem, Dept. of Education
Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Koni,Bilaspur (C.G.).

The progress of any country depends upon the quality of education offered and its practices .Indian education was well known for its Gurukul system of education in the Vedic age .Education in Indian has undergone various phases and stages of development starting from the Vedic age to the post-independent period .At all stages of development there was a concern for bringing in quality education, reflecting one, the practical aspects in education.

School is one of the place for students creativity development.School only needs an extra effort that will enable it to build a conscious and creative generation that will keep pace with the rapid change and recent development in this era of globalization or universalization, economic transformation and information communication technology (ICT)age as new discoveries emerges everyday hence the role of school is needed in guiding students towards creativity to take advantage of modern development.

Research has shown that creativity leads to intellectual development and brain growth,when creativity is nurtured well by concerned institutions.School and other social institutions play an active and influential role in developing students' creativity through their available resources and their specific planned goals.A creative school environment is one that exposes learners psychologically and socially to facilitate creativity in which learners are intrinsically motivated to discover things by themselves,it promotes all necessary ways to creativity to help students develop the creative personality traits.

Education System in Neoliberal India: An Exploration of the Commodification of Educational Space

Niraj Kumar Tiwari
Student 1st year M.Ed.
Guru Ghasidas University, Bilaspur

The present paper tries to explore the present education system of the neoliberal India through the Harvey's framework of 'neoliberalism as a creative destruction'. The imposition of market mentality and production of the surplus into the education system have degraded the moral fabrics of education and it also configured student as a client and consumer. The paper demarcates its discussion in a thread of market based norms, commodification of knowledge and asymmetrical ability to access the education. The branding and commodification of knowledge and space as products are the main features of this system. This system treats students initially as consumers and at last as a product. By taking insight from Bauman work, the paper concludes that due to consumerism, this model of education fosters a throwaway culture, wherein anything that resulted dissatisfaction is replaced by someone else having the same commercial mentality. At last it manufactured a learner student as a conspicuous consumer that only worry for getting the return that was invested at the time of getting degree contrary to the foundational value of the socialist democracy like India.
Keywords: Commodity, Client, Democracy, Education, Neoliberalism, Student

विद्यालय एवं घर में सृजनात्मकता की स्वीकार्यता के बाधक तत्व व सुझाव

प्रीती साहु
सहायक प्राध्यापक

आकांक्षा गुप्ता
सहायक प्राध्यापक

शिक्षा अध्ययनशाला, बस्तर विश्वविद्यालय, जगदलपुर

समस्त प्राणियों में मानव को सबसे गुणी व उच्च मानसिक योग्यता वाला माना जाता हैं। मनुष्य की उच्च मानसिक योग्यता के कारण उनसे सृजनात्मकता की उच्चता कि अपेक्षा अधिक की जाती हैं। घर व विद्यालय दो एसे स्थल हैं जहाँ बालकों की सृजनात्मकता का सहज व स्वाभाविक रीति से विकास होता है और यही व स्थल है जहाँ उनके सृजन को रोकने, विकृत करने तथा निर्मूल करने का काम होता है, इस बाधा के कई कारण है। घर में माता–पिता दोनों का नौकरी पेशा होने के कारण बच्चों को अधिक समय दे पाना, अपने बच्चों को दूसरे के बच्चों से आगे रखने की होड़ में वह उनकी रुचि, इच्छाओं, जिज्ञासा व स्वतन्त्रता का हनन करते है। बच्चों का सृजनात्मकता कि ओर उठाया कदम उन्हें समय की बर्बादी लगती है। विद्यालयों में अंक प्रधान मूल्यांकन होने के कारण केवल अंक पर ही ध्यान दिया जाता है। शिक्षक के अनुकरण में सृजन नहीं है। नकल के मानचित्र में किया गया सृजन सच्चा सृजन नहीं है जिसके कारण बालकों में अस्वभाविक परिवर्तन देखने को मिलता है। सृजनात्मकता स्वतन्त्रता की देन है। जब बालक को स्वतंत्र किया जाता है तब उसके स्वानुभव से उपजती है सृजनात्मकता। सच्चा सृजन, एकाग्रता, निर्भयता,

शान्ति, प्रसन्नता एवं स्वानुभव द्वारा प्रकट होती है। इस लेख का उद्देश्य विद्यार्थियों के सृजनात्मकता के विकास के बाधक तत्वों का विश्लेषणात्मक अध्ययन तथा विद्यालय व घर में उनकी स्वीकार्यता को बढ़ने के उचित सुझाव प्रस्तुत करना है। विद्यार्थियों को प्रेरित करना कि वह सृजनात्मकता के बाधक तत्वों से स्वयं को दूर रखकर स्वयं कि जिज्ञासा को शांत करने के लिये स्वानुभव, परिवार व शिक्षक की सहायता ले। विद्यार्थी कुछ नया सृजन करने की कोशिश करता है तो परिवार, विद्यालय को उसकी उपेक्षा न करके उसको प्रोत्साहित करना चाहिए।

विद्यार्थियों के सृजनशीलता के विकास में संस्थागत वातावरण की उपादेयता

डॉ. सुनील सेन
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग

विमला कुर्रे
शोद्यार्थी, शिक्षा विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,बिलासपुर (छ. ग.)

प्रस्तुत लेख के अंतर्गत आधुनिक युग में विद्यालयीन वातावरण का विद्यार्थियों के सृजनशीलता के विकास के विधियों व नीतियों का वर्णन करते हुए यह सुनिशिचित किया गया है कि संस्थागत वातावरण के विकास के लिए निर्मित किये जाने एवं साहित्य की समीक्षा के आधार पर वर्तमान विद्यालयीन वातावरण का विद्यार्थियों के सृजनशीलता के विकास का संक्षिप्त अध्ययन किया गया हैं तथा विद्यार्थियों के सृजनशीलता एवं उनके विकास के अध्ययन पर आधारित हैं तथा विद्यार्थियों के सृजनशीलता के विकास के लिय संस्थागत वातावरण के विकास एवं पाठ्य–सहगामी कियाओं एवं विद्यार्थियों के सृजनशीलता के विकास की सम्भावनाओं जैसे – प्रासंगिक नवाचार व नीतिगत विषयों पर चर्चा किया गयी हैं। यह तर्क दिया गया हैं कि विद्यार्थियों के सृजनशीलता के विकास के लिय सस्थागत वातावरण व अपनी नीतियों, व्यवस्थाओं व कक्षा–शिक्षण के माध्यम सें विद्यालय में ऐसा वातावरण निर्मित कर सकता हैं जो विद्यार्थियों के सृजनशीलता को प्रेरित कर सके एवं विद्यार्थियों में सृजनशीलता के विकास में सहायक हो।

समस्या ग्रस्त/अपराधी बालक मे समायोजन सम्बन्धी विचलन और उसका समाधान पर एक अध्ययन

राकेश कुमार
एम.एड. विद्यार्थी
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर

वर्तमान समय मे भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश अपने संकमण काल से गुजर रहें हैं। इस अवस्था में हम कई बदलाओं और आधुनिकता के नई प्रस्फुस्टन से दो चार हो रहे है। जिस गति से हम अपने आपको बदल रहे है। उस गति से हमारी शिक्षा व्यवस्था बिल्कुल भी ताल–मेल नही बिठा पा रही है। इसका प्रमाण पत्र हम भावी पीढी के आदर्श, व्यवहार विचार मे आए अंधानुकरण के माध्यम से देख सकते

है। हमारी शिक्षा व्यवस्था वस्तुतः उस गति से नही चल पा रही है जिस गति से हम आधुनिकता को अंगिकृत कर रहे है। जब हम अपने बालक बालिकाओं को नैतिकता को तोड़ते हूए और वर्जनाओं को लांघते हुए देखते है। तो हमे ये स्पष्ट आभास हो जाता है। कि वस्तुतः नवाचार ने उन्हे इतना पराभूत कर दिया है कि वे अपनी लज्जा कि भी सुरक्षा नही कर पा रहे है समाज का चहरा और हमारी शिक्षा व्यवस्था का चेहरा कितना विद्रूप हो गया है इसकी बानगी हम आज से दो वर्ष पहले देख सकते है। जब 16 दिसंबर 2012 को राष्ट्रीय राजधानी मे एक दुराचार कि घटना घटती है। उसमें सम्मिलित छः लोगो मे एक 17 वर्षीय किशोर भी था। अखिर इस 17 वर्षीय किशोर कि मनोवृति इस प्रकार कि क्यों बन गई कि वह जघन्यतम अपराध का भागी बन गया। उसने अपनी शिक्षा बिना बीच में ही क्यो छोड़ दी। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि वर्तमान समाजिक परिदृश्य में उत्पन्न भयावह समस्या जिसे समस्याग्रस्त/अपराधी बालकों के रुप में देखा जा सकता है।

Time for Teaching Outside the lines

Dr. Sambit K Padhi
Department of Education

Dr. Mukesh Chandrakar
Department of Education

Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur, Chhattisgarh.

The primary objective of the teacher education programme is to develop the proficiency and competency among the teachers, which would enable the teachers to meet the need and expectation of contemporary society. Quality in teacher education is concerned with preparing quality teachers who have competencies to teach and manage the classes in different way. In recent years, momentum has been gathering to provide education to everyone in divergent way. The concept of creative teaching and teaching for creativity are frequently used in current educational discourse. The mantra of the 'knowledge economy' is now renowned across the world, alongside the importance of innovation and creativity. As creative thinking is crucial for the knowledge economy, it is essential that education serves its purpose in improving this important aspect. Sternberg and Lubart noted that if one wanted to select the best novelist, artist, entrepreneur, or chief executive officer, one would most likely want someone who is creative. Therefore, it is widely accepted that creativity has become a critical skill in the face of future competition. The major concern of all education commissions and committees is to reform the education system in general, and to foster creativity among students in particular. In this connection, a conscious departure from the conventional mode of schooling in terms of its content, pedagogy and process is the hallmark of making teaching-learning daringly different. It has been recognized that schools and initial education play a key role in fostering and developing people's creative and innovative capacities for further learning and their working lives.

The initial part of the paper explores creativity alongside educational technology, as these are fundamental built-ups of 21st century education. The paper attempts to conceptualise

the term creativity in the light of teaching-learning process ; and draw upon a systems model of creativity, to suggest creativity emerges and exists within a system, rather than only at the level of individual processes. The papers also made an attempt to provide a path for the effective infusion of creativity and technology in the various teaching- learning model in a systemic manner. The paper tried to build discourse around infusion of creative thinking and technology in 21st century educational systems and finally provides certain practical implications with broad recommendations .

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का एक अध्ययन

डॉ. सुनील कुमार सेन
सहा. प्राध्यापक (शिक्षा विभाग)
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय
बिलासपुर

कृष्ण कुमार पाठक
रिसर्च स्कालर
बरकत्तउला विश्वविद्यालय
भोपाल

रमेश कुमार
सहा. प्राध्यापक (शिक्षा विभाग)
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय
बिलासपुर

वर्तमान के परिदृश्य में समावेशी शिक्षा की चर्चा तेजी से हो रही है जिसमे सभी की शिक्षा की बात हो रही है शिक्षा के इस प्रारूप में सामान्य बच्चों के साथ दिव्यांग बच्चों को पढ़ने की बात हो रही है इस शिक्षा पद्धति में दृष्टि बाधित, श्रवण बाधित, शारीरिक दिव्यांग आदि सभी प्रकार के दिव्यांगों को शामिल किया गया है शिक्षा की सहायता से इस प्रकार इनका सामाजिक समायोजन करने में आसानी होगी क्योकि एक सभ्य समाज से सही ढंग से सामाजिक व्यवहार सिखा जा सकता है। श्रवण बाधितों को सांकेतिक भाषा के प्रयोग से सही ढंग से शिक्षा प्रदान किया जा सकता है और इसी शिक्षा की सहायता से इन्हें सही तरीके से समायोजित किया जा सकता है।

मुख्य शब्द : श्रवण बाधित, सामाजिक समायोजन, समावेशी शिक्षा और एवं चुनौतियाँ

वर्तमान परीक्षा पद्धति के दोष तथा सृजनात्मक दृष्टि से सुझाव

पप्पू सूर्यवंशी
सहायक प्राध्यापक
शिक्षा विभाग, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर

वर्तमान परीक्षा पद्धति में व्याप्त व्यापक दोषों को देखते हुए ही मैं ''वर्तमान परीक्षा पद्धति के दोष तथा सृजनात्मक दृष्टि से सुझाव'' विषय को अध्ययन के लिए चुना हुँ, जिसमें सबसे पहले मैनें सृजनात्मक को समझाने का प्रयास किया हूँ, जिससे उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डाला हूँ। उसके बाद मैनें परीक्षा क्या होती है उसे समझाने का प्रयास किया हूँ, और वर्तमान परीक्षा पद्धति के बारे मे बताया हूँ। इसके बाद वर्तमान परीक्षा पद्धति के दोष जैसेः– परीक्षक द्वारा विद्यार्थियों के अंक काटने का कारण न बताया जाना, विभिन्न विषयों के अंको में अंतर, उत्तर पुस्तिका विद्यार्थियों को न दिखाया जाना, उत्तर पुस्तिका का

मूल्यांकन विषय विशेषज्ञ द्वारा न कराया जाना, विभिन्न शिक्षकों द्वारा एक ही उत्तर पुस्तिका में अलग–अलग अंक देना, प्रश्न पत्रों में प्रश्नो की पुनरावृत्ति होना, परीक्षा के प्रशासन में दोष, वस्तु निष्ठता का अभाव, प्रश्न पत्र में पूरे पाठ्यकम का प्रतिनिधित्व न हो पाना, जॉचकर्ता द्वारा बिना पढ़े ही उत्तरपुस्तिका का मुल्याँकन कर देना आदि पर मैनें प्रकाश डाला और फिर मैंनें सृजनात्मक दृष्टि से वर्तमान परीक्षा पद्धति मे व्याप्त दोषों को दूर करने के लिए सुझाव दिये, जिनमें प्रमुख रूप से सतत तथा व्यापक मुल्यांकन, वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का समावेश, सेमेस्टर सिस्टम, ग्रेडिंग सिस्टम, प्रश्नबैंक तैयार करना, तथा मूल्यांकन के कम्प्यूटर का प्रयोग आदि अंत में मैनें निष्कर्ष के रूप में बताया कि इन सब सुझाओं पर ध्यान से कार्य करने पर परीक्षा पद्धति के दोषों को आसानी से दूर किया जा सकता है।

CREATIVITY IN THE CLASSROOM

Dr. JyotiVerma
Assistant Professor
Department of Education

Ms. Shraddha Singh
Assistant Professor
Department of Education

Guru GhasidasVishwavidyalaya, Koni, Bilaspur

There is no doubt that creativity is the most important human resource of all. Without creativity, there would be no progress, and we would be forever repeating the same patterns."

- Edward de Bono

Creativity is a natural ability, a personality trait, something that everyone must be born with. So when it comes to **classroom activities**that promote creativity, many teachers feel that it is something that cannot be taught. However, some people believe that creativity is a skill that can be learned. Learning creativity is the outcome of hard work, determination and persistence. Even when students have the potential to learn and create something, they still need the incentives to do so. Students are more likely to express their creative potential when they are involved in meaningful and authentic activities that fit their personal interests and abilities, and are also intellectually challenging. To promote and encourage creativity in the classroom,a few strategies like making room for visual reflection in classroom teaching, integrate more hands-on learning, make classroom layout flexible, introduce unconventional learning materials, allow students to have personal choices and contribute to decision that relate to their own learning, take advantage of the available open educational resources (such as lesson plan, stimulations, quizzes and e-book that can be modified, reused, repurposed and shared). The advantage for introducing creativity in the classroom is that these creative classrooms don't just look different, they feel different. They provide an environment where students are more likely to express their ideas, think outside the box, challenge problems with innovative solutions and most importantly – learn faster and more effectively.Thus, in this paper the authors discussed the characteristics and strategies for enhancing the creativity in the classroom.

'' शिक्षक के सृजनात्मकता एवं नवोन्मेश के प्रसार का माध्यमिक स्तर के छात्रो की रूचि एवं उपलब्धि का अध्ययन''

डॉ धनंजय पाण्डेय
व्याख्याता गणित

डॉ राघवेन्द्र गौराहा
प्राचार्य

शा. बहु. उ. मा. विद्यालय बिलासपुर (छ.ग)

अध्यापक यह सामान्य अनुभव करते है कि अधिकतर विद्यार्थी गणित विषय मे रूचि नहीं रखते है। इसका विशेष कारण, स्वयं विषय नही है, परन्तु पाठन विधि के उपयुक्त न होने के कारण बालक इस विषय को पसन्द नहीं करते है। शिक्षण की प्रभावशीलता अच्छी शिक्षण पद्धतियो पर निर्भर करती है। यह अधिगम को सहज तथा सरल बनाती है।

कक्षा 9वीं के गणित पाठ्यकम के सामॉतर रेखा एवं आरेख जैसे गूढ़ पाठ पर कक्षा में शिक्षक प्रायः व्याख्यान देकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री मान लेते है। छात्र भी परीक्षा के दृष्टिकोण से इसे रट लेते है। विषय का ज्ञान न होने से गणित विषय छात्रों का अपना विषय न बन सका। फलस्वरूप इस विषय के प्रति रूचि ही जागृत नहीं होती है, जो कि उनके शैक्षिक उपलब्धि के लिए अति आवश्यक है। अतः छात्रों की भूमिका को कक्षा शिक्षण में सर्वोपरी मानकर जियो बोर्ड के द्वारा गणित शिक्षण हेतु औचित्यपूर्ण परिर्माजन करते हुए, बालक के सीखने की कला एवं दक्षता का विकास करने का यह प्रयास है।

समस्या के संभावित कारण

1. शिक्षकों द्वारा गणित पढाने की परंपरागत व्याख्यान विधि का प्रयोग करना।
2. गणित विषय के अध्यापन के दौरान छात्रों की सहभागिता का कम होना अथवा बिल्कुल ही न होना।
3. गणित विषय के अध्यापन में अभ्यास एवं निरिक्षण का सर्वदा अभाव।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत अनुसंधान का उद्येष्य निम्नलिखित है :–

1. विद्यार्थियों मे गणित के प्रति भय दूर करना।
2. विद्यार्थियों मे गणित के प्रति रूचि जाग्रित करना।
3. विद्यार्थियों द्वारा गणित में की जाने वाली त्रुटियों को जानकर इसे दूर करने का प्रयास करना।
4. विद्यार्थियों मे तर्कशक्ति का विकास करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

"जियो बोर्ड द्वारा उच्चतर माध्यमिक षाला की कक्षा 9वी मे गणित विषय के सामॉतर रेखाए एवं आरेख का अध्यापन कर छात्रो की अभिरूचि जाग्रित कर उनकी उपलब्धि बढ़ाना। ''

कार्यपद्धति –

1. किया विधि

1. समस्या के अध्ययन हेतु शिक्षकों, छात्र–छात्राओं से साक्षात्कार लिया गया और समंको की प्राप्ति हेतु पूर्व परीक्षण के अन्तर्गत शौक्षिक उपलब्धि परीक्षण का प्रशासन किया गया। इस प्रश्नावली मे कुल 25 प्रश्न लिए गए जो कि 9वीं कक्षा के अध्याय समानॉतर रेखॉए एवं आरेख से संबंधित थी। अधिकतम अंक 50 रखा गया।
2. इसके पश्चात उत्तर पुस्तिका की जॉच कर ऐसे बच्चों की सूचि बनाई गई जिन्होंने 0–4 , 5–9, 10–14, 15–19, 20–24 एवं 25 अंक प्राप्त किया। इस पूर्व परीक्षण मे चयनित 80 विद्याथियों में से 48 विद्याथियों ने 0–4 अंक प्राप्त किया एवं इसी परीक्षण मे अधिकतम प्राप्तॉक रहा 10 अंक।
3. कक्षा मे जियो बोर्ड द्वारा गणित के उक्त अध्यायों का इसके पश्चात नियमित (दो कालखण्ड) अध्यापन किया गया। प्रत्येक 3 दिवस के पश्चात मूल्यॉकन किया गया।
4. जियो बोर्ड द्वारा शोधकर्ता एवं छात्र स्वयं समानॉतर रेखॉए एवं आरेख के प्रमेयों का सत्यापन करते थे।
5. अंत में अध्यापन पश्चात परीक्षण किए गए। मॉ भारती उच्चतर माध्यमिक शाला लोरमी मुॅगेली के शिक्षकों के द्वारा भी कक्षा में बैठकर पाठ का अवलोकन किया गया एवं कुछ कालखण्डों में अध्यापन भी किया।

नमूना –

1 मॉ भारती उच्चतर माध्यमिक शाला लोरमी मुॅगेली के कक्षा नवमी के विद्यार्थी। कुल छात्रों की संख्या कृ 94 । अनुसंधान हेतु चयनित छात्रो की संख्या – 80।
2. क्षेत्र– ग्रामीण क्षेत्र ,विकासखंड – लोरमी जिला–मुॅगेली (छ.ग.)
3. समयावधि – 19 दिसंबर से 30 दिसंबर तक।

प्रयुक्त उपकरण –

छात्रों में गणित के प्रति रूचि उत्पन्न करने के लिए जियो बोर्ड के अतिरिक्त विभिन्न उपकरण प्रयोग मे लाये गए :–

1. पूर्व एवं पश्चात परीक्षण प्रश्नावली 2. साक्षात्कार (छात्रो एवं शिक्षकों से) 3. श्यामपट 4. गणित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता 5. सतत् मुल्यॉकन परीक्षण (जियो बोर्ड पर) 6. कक्षाकों विभिन्न समूहों में बॉटकर गुह कार्य देना।

पूर्व एवं पश्चात परीक्षण प्रश्नावली –

1. प्रश्नों की संख्या 25
2. प्रश्नों के प्रकार वस्तुनिष्ट प्रश्न, रिक्त स्थानों की पूर्ति, चित्र संबंधि।

प्रदत्तों का विश्लेषण –

जियो बोर्ड द्वारा शिक्षण हेतु 94 विद्यार्थियों में से 80 विद्यार्थियो का चयन कर अध्यापन करने के पश्चात परीक्षण करने पर उनके अंकों में क्रम में सुधार दिखाई देता है। यह सुधार उनमें गणित के प्रति रूचि को प्रर्दशित करता है।

स.क्र.	छात्रों की संख्या	अंक	पूर्व परीक्षण	प्रथम परीक्षण	द्वितीय परीक्षण	तृतीय परीक्षण	चतुर्थ परीक्षण	विशेष कमी या वृद्धि संबंधित वर्ग में
01	80	0–4	48	46	30	12	07	कमी
02		5–9	26	21	20	17	14	कमी
03		10–14	06	12	20	21	19	लगभग कमी
04		15–19	–.	1	08	26	30	वृद्धि
05		20–24	–	––	02	04	08	वृद्धि
06		25	–	––	–––	–––	02	वृद्धि

2.'' अभ्यास से त्रुटि कारने वाले छात्रों की संख्या एवं त्रुटियों की संख्या मे कमी पायी गयी।''

स.क्र.	त्रुटियों की संख्या	छात्रों की संख्या	परीक्षण									
			1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	0–2	80	....	....	....	....	01	05	01	12	20	28
2	3–5		....	03	02	.....	09	13	12	18	25	12
3	6–8		04	....	01	....	04	02	04	18	13	18
4	9–11		03	04	20	30	21	11	12	03	04	05
5	12–14		08	15	15	14	13	14	15	07	06	07
6	15–17		24	23	21	21	20	18	19	12	10	09
7	18–20		41	35	21	15	12	17	17	10	02	01

त्रुटि के प्रकार–

1. आमने सामने के कोण, एकान्तर कोण, संगत कोण के पहचान संबंधी त्रुटि ।
2. अन्तः कोणो का योग संबंधि अवधारणा स्पष्ट न होना ।
3. सामान्तर रेखा पर चाप संबंधि अवधारणा स्पष्ट न होना ।
4. निर्देषांक के प्रति अल्प जानकारी ।

निष्कर्ष–

1. ''खेल–खेल में (जियो बोर्ड) अर्थात गतिविधि अधारित छात्रों को गणित शिक्षण दी जाए तो उनमें इस विषय के प्रति रूचि जागृत की जा सकती है। ''छात्रों की उपलब्धि परीक्षण से प्राप्त समंक, गृहकार्य के अवलोकन, गणित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में उनकी सकीय भागीदारी, कक्षा में अभ्यास कार्य का निरीक्षण, करने पर यह पाया गया कि कक्षा में उपस्थित कुल 80 विद्यार्थियों में से जिन 56 छात्र–छात्राओं ने इस विषय के प्रति अपनी अरूचि प्रारंभ में अनुसंधानकर्ता के समक्ष प्रदर्शित की थी, उनमें 47 विद्यार्थी, अर्थात 84 प्रतिशत छात्र–छात्राएँ की अभिवृति मे साकारात्मक परिवर्तन स्पष्ट दिखाई दिया जबकि शेष 16 प्रतिशत को कुछ और समय दिया जाता तो उनमें भी साकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न होना निश्चित रूप से कहा जा सकता है।

2. " गणित मे अभ्यास एवं निरिक्षण से इस विषय मे छात्रो द्वारा की जाने वाली त्रुटियो को कम किया जा सकता है। " कक्षा मे छात्र–छात्राओ को कुल 4 समूहों में बॉटा गया और एक–एक समूह प्रमुख की नियुक्ति की गई। इन समूह प्रमुखों को यह जिम्मेदारी दी गई कि अपने–अपने समूह को दिए गए गृहकार्य को प्रतिदिन देखे और समस्या हल न होने पर उसी दिन कठिनाई का निराकरण अनुसंधानकर्ता से कराए। अनुसंधान हेतु कक्षा का स्वरूप कुछ अधिक होने व इस हेतु उपलब्ध अल्प समय में ही इसे पूर्ण करने के उद्देश्य से यह कसरत की गई। इस कार्यवाही का अनुसंधानकर्ता द्वारा सतत् निरीक्षण एवं अवलोकन किया गया। गणित विषय का कक्षा अभ्यास भी नियमित कराया गया व इसका सतत् निरीक्षण एवं अवलोकन किया गया। इन कराए गए अभ्यासों व निरीक्षण से गणित विषय में की जाने वाली सामान्य त्रुटियॉ कमशः कम होते होते न्यून्तम हो गई।

3. "गणित शिक्षण के दौरान छात्रों की सक्रीय सहभागिता, इस विषय मे छात्रों की रूचि को जाग्रित करने में सहायक होगी।"

छात्रों द्वारा जियो बोर्ड के माध्यम से आरेख, सामॉतर रेखाएँ संबंधित प्रमेय एवं प्रश्नों की सत्यता की पुष्टि खेल–खेल में की गई। जियो बोर्ड के उपयोग हेतु छात्रों को अवसर प्रदान किया गया ताकि उनकी सहभागिता निरंतर बनी रहे। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सारी गतिविधियों का अवलोकन व गणित शिक्षक के साक्षात्कार के पश्चात यह निष्कर्ष निकाला गया कि सक्रीय सहभागिता, इस विषय में छात्रों की रूचि को जागृत करने में सहायता प्रदान की।

शोध की उपयोगिता

1. माध्यमिक तथा हाई स्कूल स्तर के विद्यार्थियों मे गणित के प्रति रूचि उत्पन्न करने के लिए गणित शिक्षण की परंपरागत पद्धति के साथ–साथ जियो बोर्ड का प्रयोग करने में साकारात्मक परिणामों की प्राप्ति हो सकती है।

2. गणित शिक्षण में जियो बोर्ड के उपयोग से छात्रों की सकिय भागीदारी बनी रहती है, फलस्वरूप विषय के प्रति आकर्षण बढ़ाने मे मदद मिलता है।

IMPACT OF TECHNOLOGY IN MODERN EDUCATION

Reshamlal Pradhan
Assistant Professor
Computer Science Department

Dr. Pushkar dubey
Assistant professor
Management Department

Pt. Sundarlal Sharma (Open) University Chhattisgarh, Bilaspur(C.G.)

In today's era, Technology has large impact on every field of Education, Science and Governance in the world. We cannot think of education without imparting technology in today's scenario. Modern education is fully rely on the technology. Today education is possible for every human being at doorstep with the help of Technology. Technology has made education quick accessible at doorstep. Technology has large impact on both type of conventional and open mode education. In conventional mode, educational classes are being conducting through digital equipment's like projectors, computers, e board etc. or through online conference mode. Digitals libraries are available for the students. In open education, Students are getting education at doorsteps. Students are getting admission to higher education institutions through online mode. Institutions are providing online study materials, e-contents to the students; even examinations are conducting through online mode. By imparting quality education, Modern education is getting digitalising day by day. In future Education will also be possible in virtual mode with the help of technology.

पं.सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विवि में द्वितीय दीक्षांत समारोह का हुआ आयोजन, स्वर्ण पदक प्राप्त करने वालों में उत्साह

34 को स्वर्ण और 10198 छात्र-छात्राओं को दी गई उपाधि

नवभारत रिपोर्टर। बिलासपुर.

पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय में द्वितीय दीक्षांत समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें 10198 छात्र-छात्राओं को स्नातक, स्नातकोत्तर, डिप्लोमा एवं पत्रोपाधि उपाधि प्रदान की गई. समारोह में अतिथियों के द्वारा 34 छात्रों को स्वर्ण-पदक एवं उपाधि वितरण किया गया. इस दौरान स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले छात्रों में जबरदस्त उत्साह दिखा.

दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता प्रो. वंश गोपाल सिंह, कुलपति, पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, मुख्य अतिथि प्रो. ...

पीएचडी छात्रों का उपाधि लंबित

ओपन यूनिवर्सिटी | 45 छात्रों को दिया जाएगा मेडल, रिहर्सल में 34 छात्र पहुंचे

दीक्षांत समारोह आज, दो बार हुई रिहर्सल

सिटी रिपोर्टर | बिलासपुर

ओपन यूनिवर्सिटी में गुरुवार को द्वितीय दीक्षांत समारोह का आयोजन किया जा रहा है। समारोह सुबह 11.30 बजे से शुरू होगा। ...

ओपन यूनिवर्सिटी में रिहर्सल के दौरान कुलपति डॉ. सिंह छात्रा को उपाधि देते हुए।

आधे घंटे पहले पहुंचना होगा समारोह में

10 हजार 198 छात्रों को पत्रों उपाधि दी जाएगी

इन्हें दिया जाएगा स्वर्णपदक व उपाधि

आयोजन: पं. सुंदरलाल शर्मा मुक्त विवि का दूसरा दीक्षांत समारोह, जबलपुर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हुए शामिल

विवि ऋषि परंपरा का औपचारिक स्वरूप

पंडित सुंदरलाल शर्मा मुक्त विवि में राष्ट्रीय संगोष्ठी, शाश्वत भारत विषय पर विद्वानों ने रखे अपने विचार

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था ने मानव मन को सांप्रदायिक और क्रूर बना दिया

ओपन यूनिवर्सिटी में भावी शिक्षकों ने दी छत्तीसगढ़ी गीत, रावत नाच और सुआ नृत्य की प्रस्तुति

बीएड प्रथम वर्ष के 102 प्रशिक्षार्थियों की लगी संपर्क कक्षा, 9 प्रश्नपत्र को प्रायोगिक तरीके से पढ़ाया गया

ओपन यूनिवर्सिटी में बीएड के प्रशिक्षार्थी नृत्य की प्रस्तुति देते।

दीक्षांत समारोह में तीन छात्रों को तीन-तीन व दो को दो-दो पदक

ओपन यूनिवर्सिटी: 34 छात्र-छात्राओं को मिले गोल्ड

ओपन के दीक्षांत समारोह का हिस्सा बनेंगे बच्चे

बिलासपुर। नईदुनिया प्रतिनिधि

पंडित सुंदरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय में 21 दिसंबर को द्वितीय दीक्षांत समारोह है। पहली बार स्कूली बच्चे समारोह का हिस्सा बनेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा देशभर के विश्वविद्यालय के कुलपतियों को दीक्षांत में स्कूली बच्चों को शामिल करने आह्वान को ध्यान में रखते हुए कदम उठाया गया है।

द्वितीय दीक्षांत समारोह में सरकारी व निजी स्कूलों के 25 विद्यार्थी शिरकत करेंगे। आमतौर पर दीक्षांत में छोटे बच्चों को एंट्री नहीं रहती। समारोह में इनकी खास मेहमाननवाजी होगी। कुलपति डॉ. बंश गोपाल सिंह ने बताया कि समारोह के मुख्य अतिथि जबलपुर विवि में अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ प्रो. एडीएन वाजपेयी होंगे। शिमला विवि के पूर्व ...

20 को फुल ड्रेस रिहर्सल

20 दिसंबर को फुल ड्रेस रिहर्सल है। इस दिन सभी विद्यार्थियों को बुलाया जाएगा। विस्तृत प्रोटोकाल 19 दिसंबर को जारी होगा। जिसमें मेहमानों के आने से लेकर दीक्षांत का समय भी तय होगा। शोभायात्रा में शामिल होने वाले सभी का नाम सार्वजनिक किया जाएगा। दीक्षांत को लेकर जोरदार तैयारी चल रही है। अगले सप्ताह उपाधि धारकों की लिस्ट भी जारी होगी।

द्वितीय दीक्षांत समारोह बेहद खास होगा। 25 स्कूली बच्चे शिरकत करेंगे। पांच स्कूलों से पांच-पांच बच्चे जुड़ेंगे। दीक्षांत से अवगत कराने के साथ उन्हें पूरी जानकारी दी जाएगी। इससे उनका मनोबल भी बढ़ेगा। समाज को नई दिशा मिलेगी।

डॉ. बंश गोपाल सिंह, कुलपति पंडित सुंदरलाल शर्मा मुक्त विवि

... कि इस बार ड्रेस कोड में कोई बदलाव नहीं किया गया है। पिछली बार की तरह पारंपरिक भारतीय वेशभूषा होगी। उपाधि के लिए किसी भी छात्र-छात्राओं से शुल्क नहीं लिया जाएगा। यह पूरी तरह से निःशुल्क होगा।

आयोजन | ओयू के दीक्षांत समारोह में 10 हजार 198 छात्रों को पत्रो डिग्री दी गई

15 को स्वर्ण और 19 छात्रों को दी गई उपाधि

एजुकेशन रिपोर्टर | बिलासपुर

ओपन यूनिवर्सिटी में गुरुवार को दीक्षांत समारोह हुआ। इसमें तीन छात्रों को 3 स्वर्ण पदक, 2 छात्रों को दो और 10 छात्रों को एक-एक स्वर्ण पदक दिया गया। समारोह में उपस्थित 19 छात्रों को उपाधि प्रदान की गई। वहीं 10 हजार 198 छात्रों को पत्रो उपाधि देने की घोषणा अतिथियों द्वारा की गई। समारोह में 10 दानदाताओं के स्वर्णपदक छात्रों को दिए गए। ओयू के द्वितीय दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि रानी दुर्गावती यूनिवर्सिटी जबलपुर के प्राध्यापक प्रो. अरुण दिवाकर नाथ वाजपेयी, विशिष्ट अतिथि बीयू के कुलपति प्रो. जीडी दत्त शर्मा, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. मानसिंह परमार और अध्यक्षता ओपन यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. बंश गोपाल सिंह ने की। दीक्षांत समारोह में एमए संस्कृत के उमाशंकर बड़भड़, एमए राजनीति शास्त्र के नरेंद्र कुमार राजवाड़े और बीएड की पुष्पवती चक्रधारी को दानदाताओं और यूनिवर्सिटी का 3-3 स्वर्ण पदक दिया गया। वहीं बीएड के भानुप्रताप जोगड़े, एमएससी गणित के विरुण कुमार को दो स्वर्ण पदक दिया गया। इसके अलावा बीएससी खेमराज पटेल, एमए अर्थशास्त्र की दर्स फातमा सिद्दिकी, एमए हिंदी की रीना महापात्र सहित अन्य को स्वर्ण पदक दिया गया।

10 दानदाताओं के गोल्ड मेडल छात्रों को दिए गए, विभिन्न संकाय के छात्र-छात्राओं का रहा जमावड़ा

ओपन यूनिवर्सिटी के दीक्षांत समारोह के दौरान मंच पर उपस्थित अतिथि तथा उपाधि से सम्मानित किए गए छात्र-छात्राएं।

कर्म व गति महत्वपूर्ण है, लेकिन गति की दर नहीं: प्रो. वाजपेयी

समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. अरुण दिवाकर नाथ वाजपेयी ने कहा कि ये यूनिवर्सिटी हमारी उस प्राचीन ऋषि-परंपरा के औपचारिक स्वरूप है, जिसमें गुरु और शिष्य पास-पास बैठकर अपने ज्ञान का आदान-प्रदान किया करते थे। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति में कर्म का महत्व कम है। उन्होंने कहा कि जिस भाव को लेकर हम कर्म करते हैं, वह भाव महत्वपूर्ण है। सहज कर्म, कर्म है, लेकिन उस कर्म से हमको मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। उसके लिए श्रेष्ठ कर्म करने होंगे। कर्म महत्वपूर्ण, गति महत्वपूर्ण है, लेकिन गति की दर महत्वपूर्ण नहीं है।

भारत में उच्च शिक्षा का सकल नामांकन बढ़ाने की जरूरत: प्रो. शर्मा

दीक्षांत समारोह में बीयू के कुलपति प्रो. शर्मा ने मेडल व उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों को बधाई देते हुए कहा कि ये सभी प्रतिभा व अथक परिश्रम द्वारा स्वर्ण पदक और उपाधि प्राप्त किए हैं। उन्होंने कहा कि भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले नवयुवक का सकल नामांकन अनुपात अभी राष्ट्रीय स्तर पर 22 प्रतिशत, छत्तीसगढ़ में 19 प्रतिशत है। जबकि तमिलनाडु जैसे प्रदेश में 40 प्रतिशत है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में लगभग 800 यूनिवर्सिटी और 40 हजार कॉलेज हैं। इसमें लगभग 20 प्रतिशत युवा ही शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। ऐसे में ओपन यूनिवर्सिटी देश व प्रदेश के युवाओं अतिरिक्त योगदान है।

ऊंचाइयों को छूना इतना मुश्किल नहीं जितना लगता है: प्रो. मान सिंह

पत्रकारिता यूनिवर्सिटी रायपुर के कुलपति डॉ. मान सिंह परमार ने कहा कि यूनिवर्सिटी में प्राप्त ज्ञान और कौशल का उपयोग जीवन को समृद्ध बनाने के साथ-साथ देश व समाज हित में भी किया जाना चाहिए। युवाओं को जीविकोपार्जन के साथ जीवन जीने की कला सीखनी चाहिए। इसके अलावा नैतिकता, मानव मूल्य, संस्कार और चरित्र निर्माण पर भी ध्यान होगा। उन्होंने समाज के सभी वर्गों के स्तर में गिरावट पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि छात्र अपने भविष्य का स्वयं आर्किटेक्ट होता है। छात्रों को लक्ष्य निर्धारित कर उसे पाने की पूरी कोशिश करनी होगी।

इस वर्ष यूनिवर्सिटी में 31 हजार 700 छात्र हैं अध्ययनरत: डॉ. सिंह

ओपन यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. बंश गोपाल सिंह ने कहा कि इस यूनिवर्सिटी में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक उन सभी ... नागरिकों के लिए यह यूनिवर्सिटी को स्थापित किया गया है, जो युवा हैं या किसी ... किसी भी रोजगार, व्यवसाय, नौकरी में हैं या बेरोजगार हैं। वह परंपरागत संस्था में जाकर शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते, लेकिन ... उपाधि ... उनके लिए यह यूनिवर्सिटी है। इस वर्ष यूनिवर्सिटी से पूरे राज्य में 31 हजार 700 विद्यार्थी विभिन्न पाठ्यक्रमों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

पं. सुंदरलाल शर्मा मुक्त विवि में जल संरक्षण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

जल ही जीवन की महत्वपूर्ण जरूरत

आयोजन : शाश्वत भारत विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ समापन

सभ्यता नहीं उसका महाद्वीप है भारत

बिलासपुर। नईदुनिया प्रतिनिधि

शाश्वत भारत विषय पर पंडित सुंदरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय में चल रही तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन सोमवार को हुआ। इस मौके पर मुख्य वक्ता पूर्व राज्यसभा सदस्य व एकात्म मानव दर्शन अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान के अध्यक्ष डॉ. महेशचंद्र शर्मा ने अपनी बात रखी। कहा कि भारत एक समाज, संस्कृति, सभ्यता या परंपरा नहीं बल्कि उनका एक महाद्वीप है।

डॉ. शर्मा ने पं.दीनदयाल उपाध्याय के राष्ट्र जीवन पर योगदान को लेकर कहा कि पं.उपाध्याय ज्ञान के स्वरूप को शाश्वत मानते थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माध्यम से उन्होंने अपनी राजनीतिक यात्रा शुरू की। साथ ही अपने पुस्तक चंद्रगुप्त मौर्य और आधुनिक भारत का निर्माता के

बिलासपुर। अतिथि को स्मृति चिन्ह भेंट करते कुलपति।

कार्यक्रम में उपस्थित विश्वविद्यालय स्टॉफ व अन्य।

साथ माना गया है। सबसे ऊपर अगर कोई है तो वह मनुष्यता है। तीनों सत्रों में शोधार्थियों द्वारा 50 शोध पत्र पढ़े गए। विवरण प्रस्तुतकर्ता का कार्य सहायक प्राध्यापक डॉ. प्रकृति जेम्स, रेशमलाल प्रधान, डॉ.अनिता सिंह, संजीव कुमार लवनिया, डॉ.प्रीति रानी मिश्रा ने किया। इस अवसर पर अतिथि के रूप में विवेकानंद पीठ के प्रो.ओमप्रकाश वर्मा, कुलपति डॉ. चंद्रा गोपाल सि के साथ बड़ी संख्या में प्रोफेसर व अ शिक्षाविद मौजूद रहे।

प्राचीन गौरव पर चिंतन की जरूरत

ओपन यूनिवर्सिटी में शाश्वत भारत विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

दुनिया की सबसे श्रेष्ठ भाषा है संस्कृत

राष्ट्रीय संगोष्ठी | ओयू में पहले दिन 4 सत्र में चली संगोष्ठी, 6 वक्ताओं ने रखे विचार

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था ने मानव को साम्प्रदायिक व क्रूर बनाया है: इंद्रेश

शिक्षा व अर्थव्यवस्था में सामंजस्य नहीं: डॉ. वाजपेयी

तकनीकी सत्र में 76 शोध पत्रों का हुआ वाचन

आयोजन | पंडित सुंदरलाल शर्मा ओपन यूनिवर्सिटी में महिलाओं की दशा और सशक्तिकरण की आवश्यकता पर व्याख्यान

सशक्तिकरण का सर्वोत्तम माध्यम है शिक्षा: डॉ. बंशगो

डॉ. मंजू त्रिपाठी ने कहा - वैदिक कालीन समाज में भी महिलाओं की स्थिति विशिष्ट और सम्माननीय थी

पंडित सुंदरलाल शर्मा ओपन यूनिवर्सिटी में व्याख्यान माला को संबोधित करते हुए कुलपति डॉ. सिंह अन्य अतिथि।

महिलाओं की दशा और सशक्तिकरण की आवश्यकता पर आयोजित व्याख्यान माला में उपस्थित शिक्षक व छात्राएं।

महिलाएं संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था

कार्यक्रम | बीयू में चल रहे 'शाश्वत भारत' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ समापन

समाजवाद ज्यादा दिन नहीं चला, राष्ट्रवाद का विरोध पूंजीवाद ने किया: डॉ. सिंह

व्यावहारिक होना चाहिए शब्दों का प्रयोग : खरे

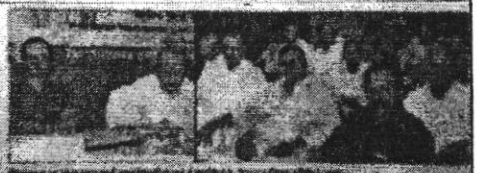

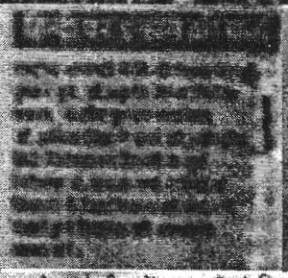

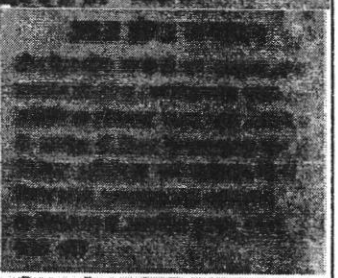

"जल जीवन की सबसे महत्वपूर्ण जरूरत है। हमारा छत्तीसगढ़ सोना उगलता है। वर्ष 2002 से हमने जल बचाने की मुहिम शुरू की है। पदयात्रा कर हम नदियों को बचाने का प्रयास कर रहे हैं। नीर और नारी आज की सबसे बड़ी जरूरत है। करके दिखाना सबसे महत्वपूर्ण है। मैं स्कूल नहीं जा पाई, लेकिन मैं करके दिखाना चाहती हूं। दूसरों के लिए जीने का नशा बड़ा निराला है और सबसे बढ़िया नशा है समाज सेवा। यह कहना है पद्मश्री मिनीमाता अलंकरण से विभूषित फूलबासन यादव का।"

280 शोध पत्रों का वाचन, प्रस्तुत किए गए 25 मॉडल

नदियां जोड़ें नहीं, तालाबों को रीचार्ज करना जरूरी

रेत नहीं, मुरम या रावड़ का इस्तेमाल

आयोजन | बीयू में चल रही दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ समापन

जम्मू-कश्मीर को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले जाना राजनैतिक नेतृत्व की चूकः आयुषी

8 तकनीकी सत्र में हुई संगोष्ठी, 180 प्रतिभागियों ने भाग लिया

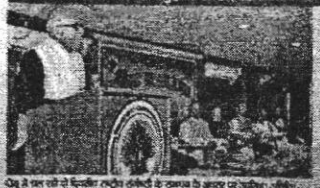

धर्म में अलगाव नहीं होना चाहिए: प्रो. पाण्डेय

जम्मू-कश्मीर के इतिहास के पुनरावलोकन की आवश्यकता

जम्मू-कश्मीर : तथ्य, समस्या एवं समाधान विषय पर हुई चर्चा, बीयू एवं पं. सुंदरलाल शर्मा वि.वि. का संयुक्त आयोजन

नवभारत रिपोर्टर | बिलासपुर.

जम्मू-कश्मीर के इतिहास के पुनरावलोकन की आवश्यकता है. वास्तव में जम्मू-कश्मीर की संस्कृति, जीवन-शैली, भारतीयता की विशेषता है. वर्तमान में हम उसी संस्कृति के संवाहक हैं. भारत एक ऐसा देश है, जिसका निर्माण प्रकृति ने किया है. उक्त बातें जम्मू-कश्मीर : तथ्य, समस्या एवं समाधान विषय पर बिलासपुर वि.वि. एवं पं. सुंदरलाल शर्मा (मुक्त) वि.वि. छ.ग. के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के दौरान वक्ताओं ने कही.

कार्यक्रम के प्रथम तकनीकी सत्र में कुलपति हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय वि.वि. प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने जम्मू-कश्मीर : तथ्य, समस्या एवं समाधान विषय पर अपने उद्बोधन में जम्मू-कश्मीर की भौगोलिक सीमाओं को स्पष्ट करते हुये कहा कि जम्मू-कश्मीर पांच भागों में बंटा है, जिसे हम जम्मू-कश्मीर कहते हैं, वे हैं- जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, गिलगित, बलुचिस्तान, जम्मू-कश्मीर के जिन पांच भागों के रहवासी की बात है तो वे भारत में ही रहना चाहते हैं, वे भारत के अभिन्न अंग हैं. द्वितीय तकनीकी सत्र में अजय कुमार ने कहा कि जम्मू-कश्मीर की भू-सामरिक स्थिति का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है. जम्मू-कश्मीर के विषय में शोध तथ्यपरक एवं विश्लेषणात्मक होनी चाहिये. जम्मू कश्मीर को वर्तमान में कश्मीर केंद्रीय बना दिया गया है. तृतीय तकनीकी सत्र में जम्मू-कश्मीर अध्ययन केन्द्र, नई दिल्ली आशुतोष भटनागर ने जम्मू-कश्मीर का इतिहास भारत का इतिहास है.

जम्मू-कश्मीर के अध्ययन में ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य महत्वपूर्ण है. कार्यक्रम के संयोजक डॉ. एच.एस. होता, सहसंयोजक द्वय डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति एवं डॉ. रुचि त्रिपाठी, आयोजन सचिव डॉ. डी.के. श्रीवास्तव एवं सह-आयोजन सचिव प्रो. रश्मि श्रीवास्तव एवं प्रो. प्रेमा साहू का कार्यक्रम के सुचारु संचालन में विशेष योगदान रहा.

जम्मू कश्मीर अध्ययन केन्द्र देश भर काम रहा है

जम्मू कश्मीर अध्ययन केन्द्र के प्रांत सचिव छत्तीसगढ़ बृजेन्द्र शुक्ला ने कहा कि जम्मू कश्मीर अध्ययन केन्द्र पूरे देश भर में काम कर रहा है. और समाज के हर वर्ग के लोगों को जम्मू कश्मीर के बारे में सही जानकारी उपलब्ध करा रहा है. जम्मू कश्मीर अध्ययन केन्द्र द्वारा लगातार कार्यशाला आयोजित की जा रही है.

पानी बचाने आदत में करना होगा बदलाव

हरिभूमि 30/3/18

हरिभूमि न्यूज़ ›› बिलासपुर

पंडित सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय में जल संरक्षण समय की मांग विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन पंडित सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर विश्वविद्यालय व डॉ. सीवी रमन विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। यह सेमिनार छत्तीसगढ़ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद द्वारा प्रायोजित था।

कुलपति पं. सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बंश गोपाल सिंह ने कहा कि जल संरक्षण आज की सबसे बड़ी जरूरत है। आने वाले समय में हम सभी विश्वविद्यालय सामाजिक सरोकार में मिलकर काम करेंगे। हम अपनी छोटी-छोटी आदतों को बदलकर बड़ा बदलाव कर सकते हैं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मंत्री अमर अग्रवाल ने कहा कि यह विश्वविद्यालय बहुत जल्द ही राष्ट्रीय स्तर व विश्व पटल पर अपनी पहचान बनाएगा। विश्वविद्यालय का कार्य ही शोध करना व ज्वलंत विषयों पर चर्चा करें। पं. सुन्दरलाल शर्मा विश्वविद्यालय ने बेहतर कार्य किया है। पानी भविष्य की बड़ी चुनौती है और तीसरा विश्वयुद्ध शायद पानी पर होगा। बिलासपुर तालाबों का शहर रहा है। उन्होंने [illegible] पर्यावरणविद् अनुपम मिश्र को याद करते हुए कहा कि आज भी खरे हैं तालाब उन्हें पुनर्जीवित किए बिना नदियों को पुनर्जीवन नहीं दिया जा सकता। इसके लिए हमें नीति बनाने की आवश्यकता है। भावी पीढ़ी के लिए अगर हम कुछ महत्वपूर्ण छोड़कर जा सकते हैं तो वो जल संरक्षण ही होगा।

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. अंजिला गुप्ता ने कहा कि जल पंचतत्वों में से एक है। वैदिक काल से इसका महत्व बताया जाता रहा है। इजराइल जैसे देश से हमें पानी का संरक्षण सीखना चाहिए। विशिष्ट अतिथि बिलासपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गौरीदत्त शर्मा ने कहा कि गंगा से भी अधिक पवित्र है नर्मदा। जो विश्व के चार में [illegible] हुई है। जल के बिना जीवन असंभव है। जीव की उत्पत्ति और सभ्यताओं का विकास जल से ही हुआ है। विशिष्ट अतिथि डॉ. सीवी रमन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रवि प्रकाश दुबे ने कहा कि विश्वविद्यालय के सिलेबस में जल संरक्षण को शामिल करना चाहिए। इसे शैक्षणिक संस्थानों से ही शुरू करना होगा। मुंबई कल्याण यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी के प्रो. शर्मा ने कहा कि मार्च डिट में बनारस से बेहतर उदाहरण नहीं हो सकता। [illegible] द्वीप इसका [illegible] उदाहरण है। जहां एक व्यक्ति की पहल से एक मैन मेड फॉरेस्ट बनाया गया जो विश्व के लिए एक उदाहरण है। इसके बाद जल संरक्षण, जल सुरक्षा एवं सतत् [illegible] की योजनाएं, [illegible] शुद्धिकरण एवं पुनः उपयोग, जल गुणवत्ता एवं प्रबंधन विषय पर दो अन्य तकनीकी सत्र शुरू हुए हैं। [illegible] मिशन के तहत कल अरपा नदी के संरक्षण के लिए संकल्प लिया जाएगा। इसमें राज्य के सभी बुद्धिजीवियों, समाज शास्त्रियों को आमंत्रित किया गया है। संगोष्ठी के लिए शिक्षकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों से 282 शोध-पत्र प्राप्त हुए हैं। जिनका वाचन किया जा रहा है। जल संरक्षण विषय पर 22 मॉडल एवं 5 पोस्टर विभिन्न विश्वविद्यालयों-महाविद्यालयों से प्राप्त हुए [illegible]।

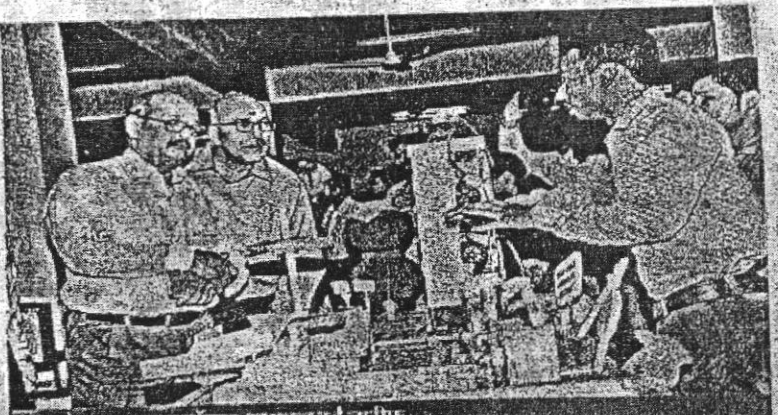

सुन्दरलाल प्रो पं. सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय में पुस्तक का विमोचन करते अतिथि।

[illegible] मंत्री अमर अग्रवाल।

पं. सुन्दरलाल शर्मा की प्रतिमा में माल्यार्पण करते मंत्री अग्रवाल।

जल संरक्षण के लिए बच्चों ने बनाए मॉडल

[illegible]

संगोष्ठी का विषय वस्तु

[illegible]

पं.सुन्दरलाल शर्मा दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन, विश्वविद्यालय मे 14 वाँ स्थापना दिवस समारोह मनाया गया

जल संरक्षण आज की सबसे बड़ी जरूरत - बंश गोपाल

नवभारत 30/3/2018

■ नवभारत रिपोर्टर। बिलासपुर

जल संरक्षण आज की सबसे बड़ी जरूरत है और आगामी समय में भी हम सभी विश्वविद्यालय सामाजिक सरोकारों में मिलकर काम करेंगे. हम अपनी छोटी-छोटी आदतों को बदलकर बड़ा बदलाव कर सकते हैं. उक्त बातें पंडित सुंदरलाल शर्मा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बंश गोपाल सिंह ने 'जल संरक्षण- समय की माँग' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान कही.

पंडित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय में 'जल संरक्षण- समय की मांग' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन बिलासपुर के चार विश्वविद्यालय पंडित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, गुरु घासीदास (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय, बिलासपुर विश्वविद्यालय एवम् डॉ. सीवी. रमन विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है. इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित नगरीय प्रशासन मंत्री अमर अग्रवाल ने कहा कि यह विश्वविद्यालय बहुत जल्द ही राष्ट्रीय [illegible] बनायेगा. गुरु घासीदास विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. अंजिला गुप्ता ने कहा कि हमे इजराइल जैसे देश से हमें पानी का संरक्षण सीखना चाहिए. ड्रीप इरीगेशन के जरिये उन्होंने पूरे विश्व को संदेश दिया है. विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित बिलासपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गौरीदत्त शर्मा ने कहा कि जल के बिना जीवन असंभव है. विशिष्ट अतिथि के रूप में ही उपस्थित कुलपति डॉ. सीवी रमन विश्वविद्यालय के प्रो. रवि प्रकाश दुबे ने कहा कि विश्वविद्यालय के सिलेबस में जल संरक्षण को शामिल किया जाना चाहिए.

एक से बढ़कर एक मॉडल, जमकर हुई तारीफ

जैविक ईंधन और जल की गुणवत्ता जांचने की मशीन, सीवरेज ट्रीटमेन्ट प्लांट, भूजल स्तर को ऊपर उठाने का सोख्ता गड्ढा, तियो येटीला [illegible] नामक पौधे से जलकुंभी की सफाई का तरीका, नदियों के किनारे पर वृक्षारोपण का मॉडल, घरेलू व औद्योगिक पानी को साफ करने का तरीका समेत एक से बढ़कर एक मॉडल प्रस्तुत किए, जिन्हें काफी सराहना मिली.

'नमामि अरपा' मिशन का शुभारंभ आज

संगोष्ठी के दूसरे दिन 'नमामि अरपा' मिशन के तहत कल अरपा नदी के संरक्षण के लिए संकल्प का कार्यक्रम आयोजित किया गया है. इसमें प्रदेश भर के समाज शास्त्रियों को आमंत्रित किया गया है.

कार्यक्रम में स्वागत भाषण एवं धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ. राजकुमार सचदेव ने किया तथा मंच संचालन डॉ. रुपेन्द्र राव ने किया. संगोष्ठी के संयोजकगण इस संगोष्ठी के संयोजकगण डॉ. अनिता सिंह, सहायक प्राध्यापक, रेशमलाल प्रधान, सहायक प्राध्यापक, पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, डॉ. के. के. चन्द्रा, सह प्राध्यापक, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, डॉ. एच. एस. होता, सह प्राध्यापक, बिलासपुर विश्वविद्यालय, डॉ. मनीष उपाध्याय, प्राध्यापक, डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय कोटा है.

राष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए महाविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

एन सी टी ई द्वारा मान्यता प्राप्त एवं दुर्ग वि.वि. से सम्बद्ध

समिति पंजीयन क्र. 3049/2010 विश्वविद्यालय सम्बद्धता क्र. 7958/2012 एन सी टी ई मान्यता क्र. 92358/2012

सर्वतोमुखी समाधान शिक्षा संस्कार समिति द्वारा संचालित

समाधान महाविद्यालय

चेतना विकास मूल्य शिक्षा के साथ

जीवन लक्ष्य

अस्तित्व ही सह अस्तित्व है

सत्र 2019–20 हेतु प्रवेश प्रारंभ

संचालित कोर्स

- B.Ed.* **कोर्स कोड 114335**
- BBA
- BCA
- B.Com. (with Computer)
- PGDCA
- B. Sc. (C.S.) इस वर्ष से
- ITI – (COPA)
- ITI – (Electrical)

उपलब्ध सुविधाएं

• Spoken English & Personality Dev. • अंग्रेजी व हिंदी माध्यम • स्वावलंबन का अवसर • कैन्टीन व छात्र–छात्राओं के लिए पृथक छात्रावास • सर्व सुविधायुक्त लाइब्रेरी • आधुनिक कम्प्यूटर लैब • आवागमन के लिए बस सुविधा • मेमोरी डेवलपमेंट के लिए निमोनिक टेक्नीक व गाइडेड डिस्कवरी का विशेष प्रशिक्षण • अनुभवी व योग्य अध्यापक • हुनर/कौशल प्रशिक्षण • वाई–फाई कैम्पस • सभी संकायों में शासन के नियमानुसार छात्रवृत्ति • उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम • स्पोर्ट्स की सुविधा • शैक्षणिक भ्रमण

सत्र 2018–19 में प्रवेश संबंधी विस्तृत जानकारी के लिए संपर्क करें

समाधान महाविद्यालय, समृद्धि विहार, बेरला रोड, बेमेतरा, फोन नं. 07824299099

मो.– 9131629036, 9329329726, 7000614366, 9424249630,

Email - samadhancollege.bemetra@gmail.com, website www.samadhancollege.in, www.samadhancollege.com

पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय द्वारा संचालित कोर्स

दूरस्थ शिक्षा

- D.El.Ed*
- B.A.
- B.Com
- M.A. Hindi
- M.A. English
- M.A. Sanskrit
- M.A. History
- M.A. Pol. Science
- M.A. Sociology
- M.A. Economics
- MSc Mathe
- PGDCA
- DCA

D.El.Ed प्रारंभ

पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय द्वारा प्रवेश लेने वाले छात्रो के लिए विशेष

"उच्च-शिक्षा आपके द्वार"

★ पाठ्य-सामग्री डाक द्वारा विद्यार्थियों के घर भेजी जाएगी।

★ "सत्रीय-कार्य" घर से लिखकर लाने की सुविधा।

★ परीक्षा परिणाम समय पर घोषित।

★ पाठ्यक्रम संबंधित समस्याओं के समाधान हेतु ऑन-लाइन सुविधा।

★ मेधावी छात्रों की शुल्क वापसी।

★ विषयवार सर्वाधिक अंक प्राप्त छात्रों का स्वर्ण पदक द्वारा सम्मान।

★ पाठ्यक्रम अध्ययन हेतु अनुभवी शिक्षकों के द्वारा समय-समय पर मार्गदर्शन।

★ संबंधित पाठ्यक्रम की आवश्यक सूचना मोबाइल पर।

अध्ययन केन्द्र कोड D2201

प्रवेश हेतू एवं अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :

9131629036, 9329329726,

9165052295

राष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए महाविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

Estd-1997 NAAC B+ ACCREDITED

D.L.S.P.G. COLLEGE

ASHOK NAGER SARKANDA

BILASPUR[C.G.]

COURSES AVELBALE

(U.G. COURESES)

1. B.A.
2. B.SC.
3. B.COM.
4. B.C.A.

(P.G. COURESES)

1. M.Com.
2. M.A.(History,English,Geography
3. M.S.W.
4. M.SC.(Chemistry,Maths,Botany,Zoology) (Physics,Micro,C.S.)

(Other Courses)

D.C.A. , P.G.D.C.A. ,B.ED.

CONTACT NO: 7898740806, 9407690456

B.D.MAHANT COLLEGE

PALI KORBA (C.G.)

COURSES AVELBALE

1. B.A. 2. B.SC. 3. B.COM

CONTACT NO: 7898740806, 9407690456

राष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए महाविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

इंदिरा गांधी कला/विज्ञान महाविद्यालय राहौद

जिला - जांजगीर चाम्पा (छ.ग.)

email: lgcollege333@rediffmail.com Mob.- 9098155099

संचालित पाठ्यक्रम

1. बी.ए. (समस्त विषय)
2. बी.एस.सी.(गणित, बायोलॉजी, माइक्रोबॉयोलाजी,बायोटेक्नोलॉजी)
3. बी.सी.ए.
4. पी.जी.डी.सी.ए.
5. एम.ए. (भूगोल, हिन्दी साहित्य, समाज शास्त्र)
6. एम.एस.सी. (रसायन, भौतिक, वनस्पति विज्ञान एवं गणित)

राहौद ऐजुकेशन सोसायटी राहौद

जिला - जांजगीर चाम्पा (छ.ग.)

संचालित पाठ्यक्रम

1. D.El.Ed. - Code- 215301
2. B.Ed. - Code- 115304

M.Ed.

email: res522@rediffmail.com Mob.- 9907133411